नव-यत्न

माह: मार्च - मई

अंक:- 01 — बेहतर बिहार के लिए साझा प्रयास — वर्ष: 2026

(भागलपुर प्रमंडल की शैक्षणिक नवाचार एवं रचनात्मक त्रैमासिक पत्रिका)

मुख्य आकर्षण

- प्रेरणा के पथ प्रदर्शक
- नव विज्ञान- नव वैज्ञानिक
- प्रधान, शिक्षक एवं विद्यालय प्रेरणा
- आसमान छूते बच्चों की कहानियाँ
- आदर्श विद्यालय
- बाल एवं शिक्षक साहित्य
- हरियाली के प्रहरी
- मृदगौरव: अपनऽ धरती अपनऽ धरोहर
- अदम्य : हौसलों की गाथा
- स्वास्थ्य विशेष
- टेक्नो मंच

कॉपीराइट सूचना

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख, चित्र, फोटोग्राफ एवं अन्य सामग्री उनके संबंधित रचनाकारों एवं **नव-यत्न** के अधिकार क्षेत्र में सुरक्षित हैं। पूर्व अनुमति के बिना किसी भी सामग्री का पुनर्प्रकाशन या प्रतिलिपि निषिद्ध है। पत्रिका में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं।

"बेहतर बिहार के लिए साझा प्रयास"

नव सोच • नव प्रयास • नव सृजन

ईमेल: navyatnamagazine@gmail.com

© नव-यत्न

संपादकीय टीम | सर्वाधिकार सुरक्षित

अंक: 01 | माह: मार्च - मई

वर्ष: 2026

COPYRIGHT

नव-यत्न टीम

संरक्षक

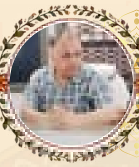

अहसन
क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक, भागलपुर प्रमंडल

मार्गदर्शन एवं प्रेरणा

श्री संजय कुमार
उप निदेशक, SCERT, पटना

श्री देवनारायण पंडित
जिला शिक्षा पदाधिकारी, बाँका

श्री राज कुमार शर्मा
जिला शिक्षा पदाधिकारी , भागलपुर

श्री संजय कुमार यादव
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (स्थापना), बाँका

श्री अमरेंद्र कुमार पांडेय
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (स्थापना), भागलपुर

श्री राज कुमार राजू
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (SSA), बाँका

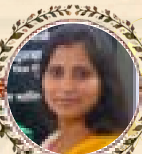

श्रीमती बबीता कुमारी
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (SSA), भागलपुर

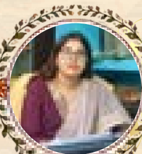

श्रीमती दिव्याश्री रॉय
कार्यक्रम पदाधिकारी, RDDE भागलपुर कार्यालय

संपादक

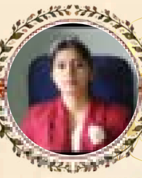

शालिनी कुमारी
वि० शि०, म० वि० शंकरपुर, चौवनियाँ, भगलपुर

सिद्धांत जी
प्रा० मध्य विद्यालय ईटहरी, फुल्लीडुमर, बाँका

डिजाइनर

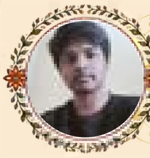

अंकित कुमार
उ० म० वि० लश्करी, रजौन, बाँका

नव-यत्न टीम

मुख्य यत्नार्थी टीम

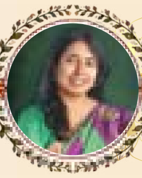

शिल्पी कुमारी
मध्य विद्यालय सैनो, जगदीशपुर, भागलपुर

राघवेन्द्र कुमार झा
प्रधानाध्यापक, म0 वि0 लखपुरा(बालक), बाराहाट, बाँका

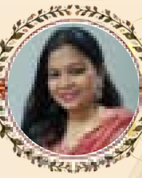

निवेदिता कुमारी
नव प्रा० वि० हरिजन टोला कलगीगंज, कहलगांव, भागलपुर

देवकांत मिश्रा
म० वि० धवलपुरा, सुल्तानगंज, भागलपुर

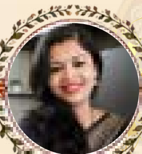

रुबी कुमारी
प्रो0 मध्य विद्यालय सरौनी, बौंसी, बाँका

उमाकांत कुमार
प्रधानाध्यापक, प्रो0 म0 वि0 खड़िहारा उर्दू (बालक),बाराहाट

ज्योति कुमारी
वि0 शि0 मध्य विद्यालय भनरा, चांदन, बाँका

काज़िम अहमद अशरफी
उर्दू म0 वि0 शाहपुर तमौनी, नाथनगर, भागलपुर

तारकेश्वर ठाकुर
प्रधान शि०, प्रा० वि० हाजीपुर, द० टोला, शाहकुंड, भागलपुर

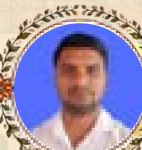

विकास कुमार साव
प्रधान शि0, प्राथमिक विद्यालय चान्दोडीह, बेलहर, बाँका

मो मासूम रज़ा"आदिल"
मध्य विद्यालय फतेहपुर, सबौर, भागलपुर

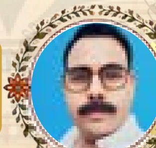

डॉ0 शिवनाथ रविदास
उर्फ़ चहकनाथ भागलपुरी
आदर्श म0 वि0 तिनटंगा दियारा, रंगा चौक, भागलपुर

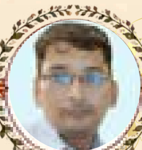

मुकेश कुमार
वि0 शि0, उ0 उच्च वि0 कोरिया, चांदन, बाँका

मुकेश कुमार मंडल
जगलाल +2 उ0 वि0 भागलपुर

आलोक रंजन
उ० उच्च वि० जाखा, धोरैया, बाँका

खुशबू कुमारी
प्रधान शि०, प्रा० वि० विदायडीह, बाँका

मो0 शहजाद अली
U.U.H.S. बसंतपुर, पीरपैंती, भागलपुर

ओम प्रकाश
मध्य विद्यालय दोगच्छी, नाथनगर, भागलपुर

नव-यत्न टीम

सहयोगी यत्नार्थी

सुप्रिया भारती
DAA +2 उच्च वि0 शम्भुगंज, बाँका

दिलीप कुमार रजक
म0 वि0 रसीदपुर दियारा, नाथनगर, भागलपुर

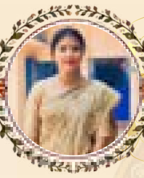

मोना लिसा
प्रो0 म0 वि0 खैरा, शाहकुंड, भागलपुर

मुकेश कुमार भारती
मध्य वि0 तरडीहा, जगदीशपुर, भागलपुर

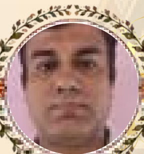

सुबीर देवब्रत
आदर्श मध्य विद्यालय सम्भुगंज, बाँका

राजीव कुमार रंजन
उत्क्रमित उच्च विद्यालय कैरी, बौंसी, बाँका

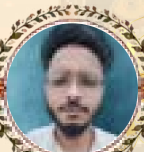

समीर आनंद
(वि० अध्यापक) म० वि० निमिया,अम्हारा,बेलहर (बाँका)

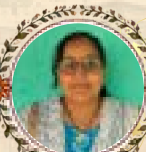

अनामिका नंदनी
कन्या प्रा० वि० एकसिंघा, बाँका

शंकर कुमार राम
म0 वि0 मसदी, सुल्तानगंज पूर्व, भागलपुर

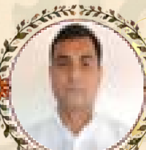

चंदन कुमार मिश्र
DIET, बाँका

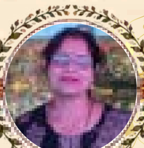

सुबाला कुमारी
उ0 उ0 मा0 वि0 विशनपुर जीछो, गोराडीह, भागलपुर

अरुण कुमार अमन
SNSHS मोहनपुर, बाराहाट, बाँका

डॉ विकास कुमार सिंह
उ0 मा0 वि0 रामचुआ, शम्भुगंज, बाँका

रितुराज सिंह
प्रो0 म0 वि0 नकटी दौलतपुर, बेलहर, बाँका

संरक्षक की कलम से...

प्रिय **शिक्षकगण**, **विद्यार्थियों**, **अभिभावकों** एवं शिक्षा से जुड़े सभी **शिक्षाविद्** साथियों,

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि प्रत्येक बच्चे की अंतर्निहित क्षमताओं को पहचानकर उन्हें विकसित करने का अवसर प्रदान करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (**NEP 2020**) भी ऐसी शिक्षा व्यवस्था की परिकल्पना करती है, जो बच्चों में जिज्ञासा, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन एवं समस्या समाधान की क्षमता का विकास करे। जब विद्यालय सीखने, सृजन, नवाचार और प्रेरणा के केंद्र बनते हैं, तब शिक्षा समाज में सकारात्मक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बन जाती है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि बिहार में **पहली बार प्रमंडल स्तर** पर विभागीय पत्रिका के प्रकाशन की अभिनव पहल की जा रही है। भागलपुर प्रमंडल के बाँका एवं भागलपुर जिले के समर्पित शिक्षकों तथा शिक्षा विभाग के सहयोग से "**नव-यत्न**" त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हो रहा है। "**बेहतर बिहार के लिए साझा प्रयास**" की भावना पर आधारित यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि उन असंख्य प्रयासों, नवाचारों, उपलब्धियों और प्रेरक कहानियों का जीवंत दस्तावेज है, जो प्रतिदिन हमारे विद्यालयों में आकार ले रही हैं।

मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका अनुभवों के आदान-प्रदान, उत्कृष्ट कार्यों के प्रसार तथा एक-दूसरे से सीखने की संस्कृति को और अधिक सशक्त बनाएगी। यह न केवल शिक्षकों और विद्यार्थियों को प्रेरित करेगी, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता, नवाचार और उत्तरदायित्व की नई चेतना का भी संचार करेगी।

मैं इस पत्रिका से जुड़े सभी संपादकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं सहयोगी साथियों को इस सराहनीय पहल के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि **"नव-यत्न"** आने वाले समय में भागलपुर प्रमंडल की शैक्षणिक उपलब्धियों, नवाचारों एवं उत्कृष्ट प्रयासों का सशक्त दर्पण बनेगी तथा बेहतर बिहार के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

आइए, हम सभी मिलकर सीखने, सिखाने और नवाचार की इस यात्रा को एक जन-आंदोलन का स्वरुप दें तथा शिक्षा के माध्यम से बेहतर बिहार के निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएँ।

आप सभी के सतत प्रयासों, नवाचारों एवं सफलताओं के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

अहसन

क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक

भागलपुर प्रमंडल

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि भागलपुर प्रमण्डल से बेहतर बिहार के लिए शिक्षा प्रसारित करने के क्रम में **"नव-यत्न"** नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। बिहार के विद्यालयों में कई तरह के नवाचार, नव प्रयोग हो रहे हैं। कई विद्यालयों के प्रेरणादायी प्रयास, बच्चों/शिक्षकों की सृजनशीलता, रचनात्मकता एवं सकारात्मक परिवर्तन अन्य विद्यालयों तक पहुँच नहीं बना पाती है ऐसी स्थिति में पत्र-पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जिसके संवाद से एक समन्वय स्थापित होता है एवं पारस्परिक विकास का सुंदर माहौल बन पाता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति **"नव-यत्न"** पत्रिका का लक्ष्य है।

पत्रिका कई महत्वपूर्ण भागों में वर्गीकृत है, जिसमें न सिर्फ **नवाचार**, **PBL**, **सुरक्षित शनिवार**, **Digital Learning**, **Model schools** की विशेषताओं को बताया गया है, बल्कि बच्चों की उपलब्धियाँ, केस स्टडी, शिशु से प्रेरणा एवं संघर्ष से सफलता तक की कहानी भी बतायी गई है। जिन शिक्षकों ने इस **"नव-यत्न"** पत्रिका के लिए प्रयत्न किए हैं इन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। उन बच्चों को मेरा आशीर्वाद, जिन्होंने अपनी लेखनी से यह साबित किया है - **हमारे विद्यार्थी, हमारा गौरव हैं।**

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग कर रहे सभी विद्वतजन का हार्दिक आभार। आशा करता हूँ इस पत्रिका का भविष्य इतना उज्ज्वल रहे कि यह निरंतर, नियमित प्रकाशित होती रहे।

संजय कुमार
उप निदेशक
SCERT, Patna

शुभकामना संदेश

प्रिय शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षा से जुड़े सभी साथियों,

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष एवं संतोष का विषय है कि भागलपुर प्रमंडल स्तर पर **"नव-यत्न"** जैसी त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका शिक्षा जगत में हो रहे सकारात्मक प्रयासों, नवाचारों, उपलब्धियों एवं प्रेरक कहानियों को एक मंच प्रदान करने की दिशा में एक सराहनीय पहल है।

विद्यालय केवल शिक्षा प्राप्त करने का स्थान नहीं, बल्कि सपनों को आकार देने और संभावनाओं को पहचान देने का केंद्र है। हमारे शिक्षक, विद्यार्थी एवं विद्यालय सीमित संसाधनों में भी निरंतर उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। इन प्रयासों को पहचान देना और उन्हें दूसरों तक पहुँचाना भी उतना ही आवश्यक है।

मुझे विश्वास है कि **"नव-यत्न"** का यह प्रयास विद्यालयों में उत्कृष्ट कार्यों को प्रोत्साहित करेगा तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सतत सुधार के लिए नई ऊर्जा प्रदान करेगा। इसके माध्यम से अनेक प्रेरक कहानियाँ सामने आएँगी जो अन्य विद्यालयों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक बनेंगी।

मैं इस सराहनीय पहल के लिए क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक महोदय, संपादकीय टीम एवं सभी योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा **"नव-यत्न"** के प्रथम अंक की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

देवनारायण पंडित
जिला शिक्षा पदाधिकारी
(बाँका)

शुभकामना संदेश

क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशक भागलपुर प्रमंडल के निर्देशन में प्रकाशित होने वाले **नव-यत्न** पत्रिका के प्रथम अंक एवं संस्करण के प्रकाशन पर मैं हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

भागलपुर प्रमंडल के तमाम समर्पित शिक्षकों को मैं बधाई देता हूँ। आप सभी का समर्पण इस शैक्षिक पत्रिका के सतत् एवं गुणवत्तापूर्ण संपादन में आपकी बौद्धिक क्षमता तथा शैक्षिक परिपक्वता को परिलक्षित करता है।

आप सभी का प्रयास काफी सराहनीय है। मैं बधाई देता हूँ नव-यत्न टीम को जिन्होंने इस अंक को विषय-विविधताओं से सजा रखा है। आपका सामूहिक शैक्षणिक प्रयास निश्चित रूप से बेहतर बिहार की परिकल्पना है।

मुझे विश्वास है कि आपका प्रयास भागलपुर प्रमंडल ही नहीं बल्कि संपूर्ण बिहार में शिक्षा को नवीन आयाम देगा। नवाचारों के सराहनीय एवं अर्थपूर्ण प्रयास के लिए संपादक एवं पूरी टीम को मैं पुनः हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

राज कुमार शर्मा
जिला शिक्षा पदाधिकारी
(भागलपुर)

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि भागलपुर प्रमंडल के शिक्षकों द्वारा **"नव-यत्न : बेहतर बिहार के लिए एक साझा प्रयास"** पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

पुस्तक न सिर्फ मानव मात्र की सच्ची मित्र होती है ,बल्कि हमारे व्यक्तित्व , हमारे विचार, संस्कारों का भी साक्षात दर्पण होती है। मेरी शुभकामनाएं भागलपुर प्रमंडल के उन क्रियाशील शिक्षकों के साथ हैं, जो इस पत्रिका के रूप में विभाग स्तरीय विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों एवं नवाचारों को भागलपुर एवं बाँका जिले के अन्य शिक्षकों के लिए उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत कर रही है।

आशा है यह पत्रिका एक मार्गदर्शिका के रुप में शिक्षकों के बीच में लोकप्रिय होगी और छात्रों, शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों को भी आकर्षित करेगी एवं उन्हें कुछ नवीन ज्ञान प्रदान करेगी।

इस पत्रिका के लिए क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशक बधाई के पात्र हैं जिनके संरक्षण में इतनी गुणवत्तापूर्ण एवं बौद्धिकता से परिपूर्ण पत्रिका का प्रकाशन होने जा रहा है। जिसने शैक्षिक परिपक्वता की विविधताओं को स्वयं में समाहित कर रखा है।

मैं **“नव-यत्न”** टीम के प्रशासन एवं संपादन में जुड़े तमाम ऊर्जावान शिक्षकों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका भागलपुर प्रमंडल ही नहीं वरन् संपूर्ण बिहार में नवाचारों को एक अर्थपूर्ण एवं सराहनीय आयाम प्रदान करेगा।

चंदन प्रभाकर
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (समग्र शिक्षा)
(भोजपुर)

शुभकामना संदेश

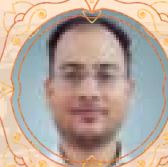

क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशक के संरक्षण में प्रकाशित होने वाले **नव-यत्न** पत्रिका के प्रथम अंक एवं संस्करण के प्रकाशन पर मैं हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

भागलपुर प्रमंडल के तमाम समर्पित शिक्षकों को मैं बधाई देता हूँ।

आप सभी का समर्पण इस शैक्षिक पत्रिका के सतत एवं गुणवत्तापूर्ण संपादन में आपकी बौद्धिक क्षमता, शैक्षिक परिपक्वता को परिलक्षित करता है।

आपका प्रयास काफी सराहनीय है। अत: मैं बधाई देता हूँ **नव-यत्न** टीम को जिन्होंने इस अंक को विषय-विविधताओं से सजा रखा है । आपका साझा प्रयास निश्चित ही बेहतर बिहार की परिकल्पना है।

मुझे विश्वास है आपका प्रयास भागलपुर प्रमंडल ही नहीं वरन् संपूर्ण बिहार में शिक्षा को नवीन आयाम देगा। नवाचारों के सराहनीय एवं अर्थपूर्ण प्रयास के लिए संपादक एवं पूरी टीम को मैं पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

नितेश कुमार
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (स्थापना)
(जमुई)

शुभकामना संदेश

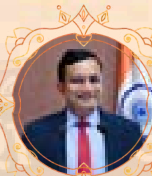

जब किसी **विद्यालय**, **शिक्षक** या **विद्यार्थी** का अच्छा कार्य दूसरों तक पहुँचता है, तो वह केवल एक उपलब्धि नहीं रह जाता, बल्कि अनेक लोगों के लिए प्रेरणा बन जाता है।

"नव-यत्न" ऐसी ही प्रमंडल स्तर पर प्रेरणादायी कहानियों, नवाचारों और सकारात्मक प्रयासों को एक मंच देने की सार्थक पहल है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका शिक्षकों और विद्यार्थियों के उत्कृष्ट कार्यों को नई पहचान देगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर करने की भावना को और मजबूत बनाएगी।

इस अभिनव प्रयास से जुड़े सभी साथियों एवं संपादकीय टीम को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

संजय कुमार यादव
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (स्थापना)
(बाँका)

शुभकामना संदेश

हर बच्चे के भीतर अनंत संभावनाएँ छिपी होती हैं। उन संभावनाओं को पहचानना, उन्हें सही दिशा देना और उनके विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना ही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है।

"**नव-यत्न**" उन शिक्षकों, विद्यार्थियों और विद्यालयों के प्रयासों को सामने लाने का एक सराहनीय माध्यम है, जो प्रतिदिन शिक्षा को अधिक रोचक, प्रभावी और जीवनोपयोगी बनाने में लगे हैं। यह पत्रिका न केवल उपलब्धियों का संकलन है, बल्कि सीखने, प्रेरित होने और नए प्रयासों की शुरुआत करने का अवसर भी है।

मुझे विश्वास है कि यह पहल भागलपुर प्रमंडल में शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार एवं उत्कृष्ट कार्यों को नई पहचान देगी और अन्य विद्यालयों को भी बेहतर करने के लिए प्रेरित करेगी।

नव-यत्न परिवार एवं सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

राज कुमार राजू
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (समग्र शिक्षा)
(बाँका)

शुभकामना संदेश

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक बच्चे की क्षमता को विकसित करना है, ताकि वह सीख सके, समझ सके, सोच सके और अपने ज्ञान का जीवन में सार्थक उपयोग कर सके। बाँका में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा समन्वयक के रुप में कार्य करते हुए मैंने देखा है कि बहुत से विद्यालयों में प्रधानाध्यपक एवं शिक्षक बहुत ही अच्छे कार्य कर रहें हैं और जब विद्यालयों में नवाचार, सहभागिता और बाल-केंद्रित शिक्षण को बढ़ावा मिलता है, तब शिक्षा वास्तव में प्रभावी बनती है।

"**नव-यत्न**" ऐसी ही सकारात्मक पहल, प्रेरक प्रयोगों और उत्कृष्ट कार्यों को साझा करने का एक सराहनीय मंच है। यह पत्रिका शिक्षकों और विद्यालयों को एक-दूसरे से सीखने, नए विचार अपनाने तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दिशा में निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी।

मुझे विश्वास है कि यह प्रयास शिक्षा में गुणवत्ता, नवाचार और सहयोग की संस्कृति को और सुदृढ़ करेगा तथा बच्चों के बेहतर सीखने के परिणामों में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

नव-यत्न के प्रथम अंक के प्रकाशन पर सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं, विद्यार्थियों एवं संपादकीय टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ।

मनोहर प्रसाद सिंह
जिला गुणवत्तापूर्ण शिक्षा समन्वयक
(बाँका)

शुभकामना संदेश

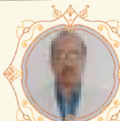

किसी भी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता उसके शिक्षकों की गुणवत्ता से निर्धारित होती है। एक प्रेरित, संवेदनशील एवं नवाचारी शिक्षक न केवल बच्चों को ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि उनमें सीखने की जिज्ञासा, आत्मविश्वास और जीवन मूल्यों का भी विकास करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा **नीति 2020** के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। आज आवश्यकता ऐसे शिक्षकों की है जो निरंतर सीखने, नवाचार करने तथा बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरुप शिक्षण को विकसित करने के लिए सदैव तत्पर रहें।

मुझे प्रसन्नता है कि "**नव-यत्न**" पत्रिका शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं विद्यालयों में हो रहे रचनात्मक प्रयासों को एक मंच प्रदान कर रही है। यह केवल उपलब्धियों का संकलन नहीं, बल्कि अनुभवों, नवाचारों और प्रेरणादायी कार्यों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। ऐसे प्रयास शिक्षकों के बीच सीखने की संस्कृति को सुदृढ़ करते हैं तथा शिक्षा की गुणवत्ता में निरंतर सुधार का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

मुझे विश्वास है कि "**नव-यत्न**" शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत सभी हितधारकों के लिए प्रेरणा एवं चिंतन का स्रोत बनेगी तथा बेहतर विद्यालय और बेहतर शिक्षण की दिशा में नए यत्नों को प्रोत्साहित करेगी। पत्रिका के प्रथम अंक के प्रकाशन पर संपादकीय टीम एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

अनुज कुमार वर्मा
प्राचार्य,जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET)
(बाँका)

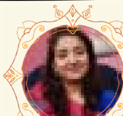

"नव-यत्न" पत्रिका के प्रकाशन का यह सुंदर प्रयास न केवल भागलपुर प्रमंडल की शैक्षिक चेतना का प्रतीक है, बल्कि यह शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं विद्यालयों में हो रहे रचनात्मक और प्रेरणादायी कार्यों को एक सशक्त मंच प्रदान करने की दिशा में अत्यंत सराहनीय पहल है।

आज शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि नवाचार, संवेदनशीलता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, स्थानीय संस्कृति एवं मानवीय मूल्यों के समन्वय से ही एक समग्र शिक्षण वातावरण का निर्माण संभव है। **"नव-यत्न"** जैसी पहलें निस्संदेह उन शिक्षकों के अथक प्रयासों, बच्चों की प्रतिभाओं, विद्यालयों के नवाचारों तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन की कहानियों को व्यापक पहचान दिलाने का कार्य करेंगी।

मैं हृदय से आशा करती हूँ कि **"नव-यत्न"** शिक्षा जगत में प्रेरणा, नवाचार और सकारात्मक सोच का एक जीवंत दस्तावेज सिद्ध होगा तथा आने वाले समय में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक बनेगा।

पत्रिका से जुड़े सभी सम्मानित शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं संपादकीय टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ।

"नवोन्मेषः प्रकाशाय, ज्ञानं लोकहिताय च।
सृजनं प्रेरणायै, शिक्षायै सततं नमः॥"

श्रुति चौबे
प्राचार्य,जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET)
(भागलपुर)

शुभकामना संदेश

“नव-यत्न” केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि शिक्षा जगत में हो रहे नवाचारों, रचनात्मक प्रयासों और सकारात्मक परिवर्तनों का सशक्त दस्तावेज़ है। यह मंच शिक्षकों की प्रतिबद्धता, विद्यार्थियों की प्रतिभा तथा विद्यालयों में विकसित हो रही प्रेरणादायी गतिविधियों को व्यापक पहचान प्रदान करेगा।

भागलपुर प्रमंडल के विद्यालयों में हो रहे उत्कृष्ट कार्यों, स्थानीय संस्कृति, तकनीकी नवाचारों एवं बच्चों की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को एक साथ प्रस्तुत करने का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी तथा शिक्षा में नवाचार और सकारात्मक सोच को नई दिशा देगी।

“नव सोच • नव प्रयास • नव सृजन — यही है नव-यत्न”

इस अभिनव पहल के लिए मैं आदरणीय क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक, भागलपुर प्रमंडल के दूरदर्शी मार्गदर्शन एवं सहयोग के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। उनके नेतृत्व में यह पत्रिका शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों को एक सशक्त मंच प्रदान कर रही है।

सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं, विद्यार्थियों एवं संपादकीय टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. मीनाक्षी चतुर्वेदी
प्रभारी प्राचार्य
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय,
(भागलपुर)

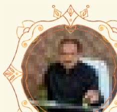

विद्यालय केवल चार दीवारों का नाम नहीं, बल्कि विचारों की प्रयोगशाला है और शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूरा करने वाला नहीं, बल्कि नवाचार का सृजनकर्ता है।

'नव-यत्न' पत्रिका उन सभी कर्मठ शिक्षक / शिक्षिकाओं के अभिनव प्रयासों को मंच देने का सराहनीय उपक्रम है, जो कक्षा कक्ष को **'रटने'** की जगह से **'रचने'** की जगह में बदलने का अवसर देता है।

यह पत्रिका केवल पन्नों का संग्रह न रहे, बल्कि हर विद्यालय के लिए प्रेरणा का दीप बने । यहाँ छपने वाला प्रत्येक नवाचार दूर-दराज के विद्यालयों में पढ़ रहे बच्चों के लिए नई संभावना का द्वार खोले ।

'नव-यत्न' टीम को अशेष हार्दिक बधाई। आशा है कि आपके नूतन प्रयासों से शिक्षा का अर्थ बोझ से बदलकर 'खोज' बन जाएगा, और हर शिक्षक/शिक्षिका का यत्न, राष्ट्र-निर्माण का नव-यत्न सिद्ध होगा।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

राकेश कुमार (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
सी. टी. ई. घंटाघर एवं वरिष्ठ शिक्षाविद

शुभकामना संदेश

क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशक के संरक्षण में प्रकाशित होने वाले **नव-यत्न** पत्रिका के प्रथम अंक एवं संस्करण के प्रकाशन पर मैं हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

भागलपुर प्रमंडल के तमाम समर्पित शिक्षकों को मैं बधाई देता हूँ।

आप सभी का समर्पण इस शैक्षिक पत्रिका के सतत एँवं गुणवत्तापूर्ण संपादन में आपकी बौद्धिक क्षमता, शैक्षिक परिपक्वता को परिलक्षित करता है।

आपका प्रयास काफी सराहनीय है। अतः मैं बधाई देता हूँ **नव-यत्न** टीम को जिन्होंने इस अंक को विषय-विविधताओं से सजा रखा है । आपका साझा प्रयास निश्चित ही बेहतर बिहार की परिकल्पना है।

मुझे विश्वास है आपका प्रयास भागलपुर प्रमंडल ही नहीं वरन् संपूर्ण बिहार में शिक्षा एवं शिक्षा को नवीन आयाम देगा। नवाचारों के सराहनीय एवं अर्थपूर्ण प्रयास के लिए संपादक एवं पूरी टीम को मैं पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

कुमार मनोज
BEO नाथनगर
(भागलपुर)

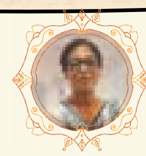

"नव-यत्न" केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि शिक्षा, नवाचार, सृजनात्मकता और प्रेरणा का एक सशक्त मंच है। यह पहल शिक्षकों, विद्यार्थियों और विद्यालयों में हो रहे उत्कृष्ट कार्यों को पहचान दिलाने तथा उन्हें व्यापक स्तर पर साझा करने का एक सुंदर अवसर प्रदान करती है।

शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन तभी संभव है जब अच्छे प्रयासों, नवाचारों और प्रेरक कहानियों को समाज के सामने लाया जाए। मुझे विश्वास है कि "नव-यत्न" पत्रिका भागलपुर प्रमंडल के विद्यालयों में हो रहे रचनात्मक कार्यों, बच्चों की प्रतिभाओं, शिक्षकों की समर्पित सेवाओं तथा स्थानीय संस्कृति और ज्ञान को एक नई पहचान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

मैं आदरणीय क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक एवं पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों को इस सराहनीय पहल के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। साथ ही सभी शिक्षक साथियों एवं छात्र-छात्राओं से आग्रह करती हूँ कि वे अपने अनुभव, नवाचार, उपलब्धियाँ और रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ साझा कर इस पत्रिका को और अधिक समृद्ध बनाएं।

माँ सरस्वती की कृपा से **"नव-यत्न"** ज्ञान, प्रेरणा और सकारात्मक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम बने तथा निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे, यही मेरी मंगलकामना है।

कुमारी गुड्डी
शिक्षिका
(राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान प्राप्त)

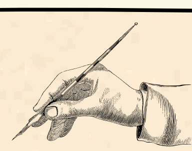

संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

परिवर्तन की हर बड़ी कहानी एक छोटे से यत्न से आरंभ होती है। जब ऐसे अनेक यत्न एक साथ जुड़ते हैं, तो वे समाज में सकारात्मक बदलाव का आधार बनते हैं। **"नव-यत्न"** इसी विश्वास की अभिव्यक्ति है।

भागलपुर एवं बाँका के विद्यालयों में प्रतिदिन ऐसे अनेक प्रेरक कार्य हो रहे हैं, जो बच्चों के सीखने के अनुभव को समृद्ध बना रहे हैं। कहीं शिक्षक नवाचार के माध्यम से कक्षा को जीवंत बना रहे हैं, कहीं बच्चे विज्ञान, कला, खेल एवं साहित्य के क्षेत्र में नई उपलब्धियाँ अर्जित कर रहे हैं, तो कहीं विद्यालय सामूहिक प्रयासों से परिवर्तन की नई कहानियाँ लिख रहे हैं। इन प्रयासों को पहचान देने, उन्हें दस्तावेज़ के रुप में संजोने तथा एक साझा मंच प्रदान करने के उद्देश्य से **"नव-यत्न"** का यह प्रथम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

यह पत्रिका केवल उपलब्धियों का संकलन नहीं, बल्कि उन सपनों, संघर्षों, नवाचारों और सकारात्मक प्रयासों की कहानी है जो बेहतर शिक्षा और बेहतर समाज की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं।

हमें गर्व है कि इस अंक में शिक्षा के साथ-साथ हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को भी स्थान दिया गया है। **क्षेत्रीय लोककला मंजूषा**, **मंदार की ऐतिहासिक** एवं **सांस्कृतिक पहचान**, तथा **अंगिका भाषा** की मिठास इस पत्रिका को अपनी मिट्टी से जोड़ती है। हमारा प्रयास है कि आधुनिक शिक्षा और स्थानीय संस्कृति का यह सुंदर संगम आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने।

इस पत्रिका के प्रकाशन में मार्गदर्शन प्रदान करने वाले आदरणीय अधिकारियों, सहयोगी शिक्षकों, लेखकों, विद्यार्थियों तथा सभी योगदानकर्ताओं के प्रति हम अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। विशेष रुप से उन शिक्षकों और बच्चों को नमन, जिनके सतत प्रयासों ने इस पत्रिका की विषयवस्तु को जीवंत बनाया है।

आशा है कि **"नव-यत्न"** का यह प्रथम अंक आपको प्रेरित करेगा, नए विचार देगा और शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए उत्साहित करेगा।

आपके सुझाव और सहयोग हमारी इस यात्रा को और अधिक सार्थक बनाएँगे।

संपादक
नव-यत्न

महत्वपूर्ण दिवस

जून

- 5 जून: विश्व पर्यावरण दिवस
- 7 जून: विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस
- 8 जून: विश्व महासागर दिवस
- 14 जून: विश्व रक्तदाता दिवस
- 21 जून: अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
- 21 जून: अंतर्राष्ट्रीय पितृ दिवस

जुलाई

- 1 जुलाई: राष्ट्रीय डॉक्टर दिवस
- 2 जुलाई: विश्व खेल पत्रकार दिवस
- 11 जुलाई: विश्व जनसंख्या दिवस
- 26 जुलाई: कारगिल विजय दिवस

अगस्त

- 1 अगस्त: लोकमान्य तिलक पुण्यतिथि
- 15 अगस्त: भारतीय स्वतंत्रता दिवस
- 29 अगस्त: राष्ट्रीय खेल दिवस

नव-यत्न

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पेज क्र.
1	नव-यत्न: उद्देश्य एवं परिचय	1
2	प्रेरणा के पथ प्रदर्शक	2
3	नव विज्ञान-नव वैज्ञानिक	3
4	नवाचार की उड़ान	4
5	प्रेरक शिक्षक	5-6
6	आसमान छूते सपने	7-8
7	अधिगम की नयी दिशा	9-10
8	साहित्य सरिता	11-17
9	मृद्गौरव: अपनऽ धरती अपनऽ धरोहर	18-22
10	सेवा से सेवानिवृत तक	23
10	प्रेरक प्रधान	24-25
12	आदर्श विद्यालय की ओर बढ़ते कदम	26-27
13	ISM लैब / डिजिटल लर्निंग	28
14	हरियाली के प्रहरी	29-30
15	सुरक्षित शनिवार विशेष	31
16	स्वास्थ्य विशेष	32
17	टेक्नो मंच	33-34

उद्देश्य एवं परिचय

परिवर्तन की हर बड़ी कहानी एक छोटे से यत्न से प्रारंभ होती है। जब ऐसे असंख्य यत्न एक साझा उद्देश्य के साथ जुड़ते हैं, तब वे केवल उपलब्धियाँ नहीं गढ़ते, बल्कि समाज के भविष्य की नई दिशा भी निर्धारित करते हैं। शिक्षा का क्षेत्र ऐसे ही अनगिनत प्रयासों का क्षेत्र है, जहाँ प्रतिदिन शिक्षक, विद्यार्थी, विद्यालय एवं समुदाय मिलकर बेहतर कल के निर्माण में अपना योगदान देते हैं। अनेक बार ये प्रेरणादायी प्रयास अपने सीमित परिवेश तक ही सीमित रह जाते हैं और व्यापक समाज तक उनकी गूँज नहीं पहुँच पाती। इन्हीं सकारात्मक पहलों को पहचान देने, उन्हें दस्तावेज़ के रुप में संजोने तथा एक व्यापक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से "नव-यत्न" का शुभारंभ किया गया है।

"नव-यत्न" का मूल बीज आदरणीय **क्षेत्रीय उप शिक्षा निदेशक (RDDE)**, भागलपुर प्रमंडल के उस दूरदर्शी विचार से उत्पन्न हुआ है, जिसके केंद्र में शिक्षा में हो रहे सकारात्मक कार्यों को सम्मान और पहचान प्रदान करना है। उनके मार्गदर्शन में यह प्रयास एक ऐसी पत्रिका के रुप में विकसित हुआ है जो शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं विद्यालयों के उत्कृष्ट कार्यों को समाज के समक्ष लाने का माध्यम बनेगी।

"नव-यत्न" भागलपुर प्रमंडल की त्रैमासिक विभागीय पत्रिका है, जिसका प्रकाशन भागलपुर एवं बाँका जिले के शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा शिक्षा विभाग के सामूहिक सहयोग से किया जा रहा है। यह पत्रिका उन नवाचारों, उपलब्धियों, अनुभवों और प्रेरक कहानियों का मंच है, जो हमारे विद्यालयों में प्रतिदिन आकार ले रही हैं, किन्तु अनेक बार सीमित दायरे तक ही रह जाती हैं।

इस पत्रिका का उद्देश्य केवल उपलब्धियों का संकलन करना नहीं है, बल्कि एक ऐसी जीवंत शैक्षिक संस्कृति का निर्माण करना है जहाँ अनुभवों का आदान-प्रदान हो, नवाचारों को नई पहचान मिले और प्रेरणादायी कार्यों से एक-दूसरे को सीखने का अवसर प्राप्त हो। जब एक विद्यालय दूसरे विद्यालय के सफल प्रयोगों से प्रेरणा लेता है, जब एक शिक्षक किसी सहकर्मी के नवाचार को अपनाता है और जब एक विद्यार्थी अपने जैसे किसी बच्चे की सफलता की कहानी पढ़कर नए सपने देखता है, तब परिवर्तन की नई संभावनाएँ जन्म लेती हैं। **"नव-यत्न"** इसी साझा सीख, सहयोग और सतत विकास की भावना को आगे बढ़ाने का विनम्र प्रयास है।

भागलपुर प्रमंडल केवल शैक्षणिक गतिविधियों का केंद्र ही नहीं, बल्कि अपनी समृद्ध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और लोक परंपराओं के लिए भी विशिष्ट पहचान रखता है। विश्वविख्यात रेशम नगरी भागलपुर, प्राचीन ज्ञान परंपरा के गौरवशाली प्रतीक विक्रमशिला महाविहार, लोकसंस्कृति की अमूल्य धरोहर मंजूषा कला तथा बाँका की गौरवपूर्ण पहचान मंदार पर्वत इस क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि के जीवंत प्रतीक हैं। समुद्र मंथन की पौराणिक कथा से जुड़ा मंदार पर्वत निरंतर प्रयास, धैर्य, संघर्ष और सृजन का संदेश देता है। **"नव-यत्न"** भी उसी भावना को आत्मसात करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में सतत सुधार और सकारात्मक परिवर्तन का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है।

पत्रिका के स्वरुप और डिज़ाइन में क्षेत्र की गौरवशाली मंजूषा कला को विशेष स्थान दिया गया है। मंजूषा कला केवल एक चित्रकला शैली नहीं, बल्कि इस क्षेत्र की सांस्कृतिक चेतना, लोकविश्वास और रचनात्मक अभिव्यक्ति का जीवंत प्रतीक है। इसी प्रकार, स्थानीय भाषा अंगिका को भी सम्मानजनक स्थान देकर क्षेत्रीय भाषाई विरासत को संरक्षित और प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया है। हमारा विश्वास है कि शिक्षा तभी पूर्ण और सार्थक होती है जब वह अपनी संस्कृति, अपनी भाषा और अपनी जड़ों से जुड़ी रहे।

"नव-यत्न" में नवाचार विशेष, विद्यालय प्रेरणा, शिक्षक प्रेरणा, बच्चों की उपलब्धियाँ, प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण, विज्ञान एवं तकनीकी गतिविधियाँ, इको क्लब, सुरक्षित शनिवार, स्थानीय भाषा एवं लोककला, प्रेरक व्यक्तित्व तथा रचनात्मक अभिव्यक्तियों जैसे विविध आयामों को स्थान दिया गया है। इस प्रकार यह पत्रिका शिक्षा, संस्कृति और समाज के बीच एक सशक्त सेतु के रुप में कार्य करने का प्रयास करती है।

हम आशा करते हैं कि **"नव-यत्न"** भागलपुर प्रमंडल में हो रहे उत्कृष्ट शैक्षिक प्रयासों का एक विश्वसनीय दस्तावेज़ बनेगी, नवाचारों को नई पहचान देगी तथा शिक्षकों, विद्यार्थियों और समाज के बीच प्रेरणा, संवाद और सहयोग का एक प्रभावी माध्यम सिद्ध होगी।

"नव-यत्न" केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि बेहतर बिहार के निर्माण की दिशा में किए जा रहे असंख्य सकारात्मक प्रयासों का सामूहिक स्वर है। यह उन यत्नों का उत्सव है जो भविष्य गढ़ रहे हैं, उन सपनों का मंच है जो नई उड़ान भर रहे हैं, और उस विश्वास का प्रतीक है कि साझा प्रयासों से ही बेहतर समाज और बेहतर बिहार का निर्माण संभव है।

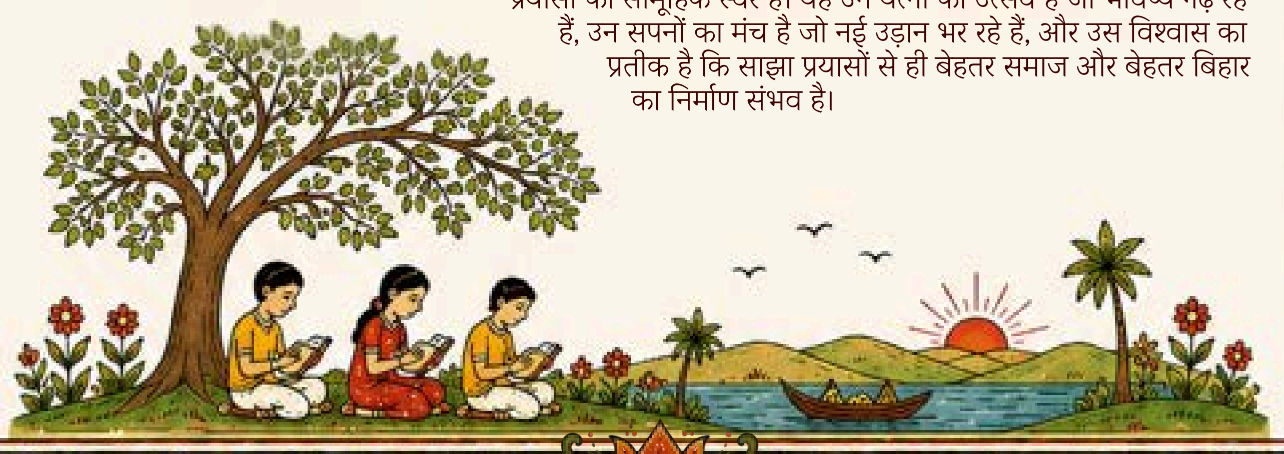

एक सैनिक की दूसरी लड़ाई

प्रेरणा के पथ प्रदर्शक

बिहार के **सारण** जिले का एक मध्यमवर्गीय परिवार का साधारण-सा लड़का। न कोई प्रतिष्ठित विद्यालय की चमक, न बड़े शहरों का माहौल, न ही महंगी कोचिंग संस्थानों का सहारा। जीवन की शुरुआत उन्हीं सामान्य परिस्थितियों में हुई, जहाँ अधिकांश युवा अपने सपनों को परिस्थितियों के हवाले कर देते हैं। लेकिन इस युवक ने परिस्थितियों को अपनी नियति मानने से इंकार कर दिया।

युवा अवस्था में उसने भारतीय सेना की वर्दी पहनकर देशसेवा का मार्ग चुना। **वर्ष 1997** में **भारतीय सेना** के तोपखाना विभाग में एक सैनिक के रुप में भर्ती हुआ। कठिन प्रशिक्षण, अनुशासित जीवन और सीमित संसाधनों के बीच उसने अपने भीतर एक ऐसे सपने को जीवित रखा, जो उस समय असंभव-सा प्रतीत होता था– सिविल सेवा में जाने का सपना।

वर्ष 2003 के आसपास, सेना में सेवा करते हुए एक पुस्तकालय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिला। वहीं पहली बार उसके मन में यह विचार आया कि वह भी सिविल सेवा जैसी प्रतिष्ठित परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता है। उस समय वह केवल इंटरमीडिएट उत्तीर्ण था। लेकिन उसने ठान लिया कि शिक्षा और आत्मविकास की यात्रा अब नहीं रुकेगी।

सेना में सेवा करते हुए ही पत्राचार पाठ्यक्रम से स्नातक और फिर स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। वर्ष 2013 में हवलदार के पद से सेवानिवृत्त होने तक वह केवल एक सैनिक नहीं रह गया था, बल्कि अपने सपनों को आकार देने वाला एक जुझारु अभ्यर्थी बन चुका था।

सेवानिवृत्ति के बाद उसने पूरी ताकत से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी शुरु की। **56वीं से 59वीं BPSC** में प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार तक पहुँचा, लेकिन अंतिम चयन नहीं हुआ। इसके बाद पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण बैंकिंग क्षेत्र में नौकरी करनी पड़ी।

नौकरी के साथ तैयारी आसान नहीं थी। दिन में बैंक की जिम्मेदारियाँ और रात में पढ़ाई। कई बार केवल दो से तीन घंटे ही अध्ययन के लिए मिल पाते थे। छुट्टियाँ दूसरों के लिए आराम का दिन होती थीं, लेकिन उसके लिए अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण अवसर।

लेकिन संघर्षों का दौर यहीं समाप्त नहीं हुआ। **60वीं, 62वीं, 63वीं, 65वीं और 66वीं BPSC** में सफलता हाथ नहीं लगी। 64वीं BPSC में प्रारंभिक परीक्षा पास करने के बावजूद मुख्य परीक्षा में चयन नहीं हो पाया। 66वीं में तो प्रारंभिक परीक्षा मात्र एक अंक से छूट गई।

लगातार असफलताओं के बावजूद उसने हार नहीं मानी। उसने अपनी कमजोरियों को पहचाना, उत्तर लेखन पर काम किया, डेटा इंटरप्रिटेशन (DI) का गहन अभ्यास किया और सीमित समय में भी निरंतर अध्ययन जारी रखा। **67वीं BPSC** तक पहुँचते-पहुँचते उसका अनुभव, आत्मविश्वास और तैयारी तीनों परिपक्व हो चुके थे। परिणामस्वरुप मुख्य परीक्षा में **503 अंक** प्राप्त कर उसने शानदार सफलता अर्जित की। साक्षात्कार में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और अंततः **96वीं रैंक** के साथ बिहार शिक्षा सेवा में चयनित हुआ।

28 अक्टूबर को जब परिणाम आया, तब वर्षों का संघर्ष, असफलताओं की पीड़ा और अथक परिश्रम एक साथ आँसुओं में बदल गया। यह केवल एक व्यक्ति की सफलता नहीं थी, बल्कि उन सभी सैनिकों, नौकरीपेशा अभ्यर्थियों और मध्यमवर्गीय युवाओं की उम्मीदों की जीत थी, जो सीमित संसाधनों के बावजूद बड़े सपने देखने का साहस रखते हैं।

इस दौरान उसने केवल **BPSC** ही नहीं, बल्कि अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में भी अपनी किस्मत आजमाई। वर्ष 2017 में UPSC की परीक्षा दी। दो बार झारखंड लोक सेवा आयोग (**JPSC**) की परीक्षा दी, जिसमें दूसरे प्रयास में मुख्य परीक्षा मात्र 16 अंकों से छूट गई। दो बार उत्तराखंड लोक सेवा आयोग (**UKPSC**) की परीक्षा भी दी और दूसरे प्रयास में साक्षात्कार तक पहुँचा। बाद में 67वीं BPSC में अंतिम चयन हो जाने के कारण उसने **UKPSC** का साक्षात्कार छोड़ दिया।

आज उनकी कहानी हजारों युवाओं को यह विश्वास दिलाती है कि सफलता के लिए न तो उम्र बाधा है, न पृष्ठभूमि और न ही संसाधनों की कमी। आवश्यकता है केवल निरंतर प्रयास, अनुशासन और अटूट विश्वास की।

वह साधारण-सा लड़का, जिसने कभी भारतीय सेना में एक सैनिक के रुप में अपनी यात्रा शुरु की थी, आज बिहार शिक्षा विभाग में अपनी सेवा दे रहा है।

ये हैं **श्री संजय कुमार यादव** जो वर्तमान मे **शिक्षा विभाग बाँका** में **जिला कार्यक्रम पदाधिकारी(स्थापना)** के पद पर कार्यरत हैं तथा अपनी कर्मनिष्ठा, अनुशासन और प्रेरणादायक व्यक्तित्व से शिक्षा जगत को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं।

इनकी यात्रा हर उस विद्यार्थी, शिक्षक, सैनिक और अभ्यर्थी के लिए प्रेरणा है जो कभी-कभी अपनी परिस्थितियों को अपनी सीमा समझ बैठते हैं।

इनकी कहानी हमें सिखाती है कि असफलताएँ अंत नहीं होतीं, बल्कि सफलता तक पहुँचने की सीढ़ियाँ होती हैं।
जो व्यक्ति गिरकर भी उठता रहता है, अंततः वही इतिहास रचता है।

सपनों की उड़ान

नव विज्ञान- नव वैज्ञानिक

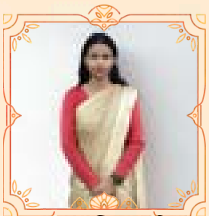

कभी-कभी एक शिक्षक का विश्वास बच्चों के जीवन की दिशा बदल देता है। बाँका जिले के शम्भुगंज स्थित **डी.ए.ए. हाई स्कूल** की शिक्षिका **सुप्रिया भारती** की कहानी इसी विश्वास, समर्पण और नवाचार की कहानी है, जिसने सरकारी विद्यालय के बच्चों को राष्ट्रीय स्तर तक अपनी पहचान बनाने का अवसर दिया।

दिसंबर 2025 में आयोजित **बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी-2025** में "सुरक्षित भविष्य के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी" विषय के अंतर्गत सुप्रिया भारती ने अपने विद्यार्थियों के साथ "**हरित ऊर्जा**" उपविषय पर कार्य करने का निर्णय लिया। विद्यार्थियों के साथ विचार-विमर्श के बाद जल ऊर्जा और पवन ऊर्जा पर आधारित एक **हाइब्रिड ग्रीन एनर्जी मॉडल** तैयार किया गया। जिला स्तरीय प्रतियोगिता में निजी विद्यालयों के आकर्षक मॉडलों के बीच सरकारी विद्यालय के बच्चे शुरुआत में थोड़े संकोच में थे। लेकिन सुप्रिया भारती ने उनका आत्मविश्वास बढ़ाया और उन्हें परिणाम से अधिक सीखने पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। बच्चों ने पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने मॉडल की प्रस्तुति दी और विद्यालय का चयन राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हो गया।

SCERT, पटना में आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए टीम ने एक नया और अभिनव विचार विकसित किया– **रेलवे विंड एनर्जी**। विद्यार्थियों ने अध्ययन किया कि तेज गति से गुजरने वाली ट्रेनों से उत्पन्न वायु-दबाव का उपयोग टरबाइनों के माध्यम से बिजली उत्पादन के लिए किया जा सकता है। शोध और अध्ययन के आधार पर तैयार इस मॉडल ने निर्णायकों को प्रभावित किया और हरित ऊर्जा विषय के अंतर्गत पूरे बिहार से चयनित तीन मॉडलों में स्थान प्राप्त किया।

इसके बाद जनवरी 2026 में कोलकाता स्थित **Eastern India Science & Engineering Fair** में भाग लेने का अवसर मिला। इस बार टीम ने अपने टरबाइन कॉन्सेप्ट को और व्यापक रुप दिया। मॉडल में यह दर्शाया गया कि रेलवे ट्रैक, हवाई अड्डों और एक्सप्रेसवे पर उत्पन्न वायु-दबाव का उपयोग भी स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन के लिए किया जा सकता है।

कोलकाता में भाषा एक बड़ी चुनौती थी। अधिकांश विद्यार्थी हिंदी माध्यम से थे, जबकि प्रतियोगिता में अंग्रेज़ी और बांग्ला का प्रभाव अधिक था। इस चुनौती से निपटने के लिए पूरी प्रस्तुति हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में तैयार की गई। एक छात्र और एक छात्रा की टीम ने जिस आत्मविश्वास, तालमेल और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ अपने प्रोजेक्ट की प्रस्तुति दी, उसने निर्णायकों को प्रभावित कर दिया।

इस उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए विद्यालय को **Best Team Award** से सम्मानित किया गया तथा प्रोजेक्ट को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों को सम्मान राशि मिली, विद्यालय को ट्रॉफी एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए और सुप्रिया भारती को **Best Team Guide Teacher Award** से सम्मानित किया गया।

हालाँकि इस पूरी यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि कोई पुरस्कार नहीं थी। सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन अभिभावकों की सोच में देखने को मिला। जो अभिभावक कभी ऐसी गतिविधियों को पढ़ाई से अलग मानते थे, वही अब बच्चों को विज्ञान, नवाचार और प्रोजेक्ट आधारित गतिविधियों में आगे बढ़ाने के लिए उत्साहपूर्वक सहयोग कर रहे हैं। सुप्रिया भारती की यह यात्रा इस बात का प्रमाण है कि प्रतिभा संसाधनों की मोहताज नहीं होती। यदि बच्चों को सही अवसर, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिले, तो वे किसी भी मंच पर अपनी पहचान बना सकते हैं। यह केवल एक विद्यालय की सफलता की कहानी नहीं, बल्कि उन सपनों की उड़ान की कहानी है, जिन्हें एक शिक्षक के विश्वास ने नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

सुप्रिया भारती
डी.ए.ए. +2 हाई स्कूल शम्भुगंज (बाँका)

बंद कमरों से खुली धूप तक

नवाचार की उड़ान

चारों तरफ खेतों की हरियाली, माटी की सोंधी महक और बीच में बसा प्यारा-सा गाँव कलगीगंज। **प्राथमिक विद्यालय हरिजन टोला, कलगीगंज** की शिक्षिका **निवेदिता कुमारी** के मन में हमेशा यह प्रश्न उठता था कि क्या शिक्षा केवल ब्लैकबोर्ड और कॉपी तक सीमित रहनी चाहिए? क्या बच्चों को कक्षा की चारदीवारी से बाहर की दुनिया से जोड़कर सीखने का अवसर नहीं मिलना चाहिए? इसी सोच ने एक अनूठी पहल को जन्म दिया। एक दिन कक्षा 5 के बच्चों को विद्यालय से बाहर एक विशेष शैक्षिक भ्रमण पर ले जाया गया। गंतव्य था गाँव में स्थित प्रिया मशरुम फार्म। उद्देश्य केवल भ्रमण कराना नहीं था, बल्कि बच्चों को आत्मनिर्भरता, उद्यमिता और आजीविका के नए अवसरों से परिचित कराना था।

फार्म पर पहुँचने के बाद बच्चों को मशरुम उत्पादन की पूरी प्रक्रिया से परिचित कराया गया। उन्हें बताया गया कि किस प्रकार स्पॉन, उपयुक्त तापमान और नमी के माध्यम से मशरुम तैयार किया जाता है तथा यह कैसे रोजगार और आय का एक प्रभावी साधन बन सकता है।

बच्चों ने पूरे उत्साह और जिज्ञासा के साथ इस प्रक्रिया को समझा। वे लगातार प्रश्न पूछते रहे और हर जानकारी को बड़े ध्यान से ग्रहण करते रहे। सीखने का यह अनुभव उनके लिए बिल्कुल नया और रोमांचक था। पुस्तकों में पढ़ी गई बातें पहली बार वास्तविक रुप में उनके सामने थीं। इस शैक्षिक भ्रमण का प्रभाव केवल बच्चों तक सीमित नहीं रहा। घर लौटने के बाद बच्चों ने मशरुम उत्पादन से जुड़ी जानकारियाँ अपने परिवारों, विशेषकर माताओं के साथ साझा कीं। परिणामस्वरुप गाँव की कई महिलाओं ने अपने घरों में छोटे स्तर पर मशरुम उत्पादन का प्रयास शुरु किया।

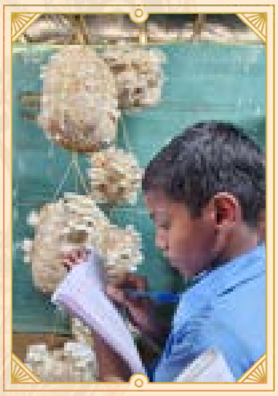

हालाँकि यह यात्रा चुनौतियों से मुक्त नहीं है। कभी मौसम अनुकूल नहीं रहता तो कभी उत्पादन अपेक्षा के अनुसार नहीं हो पाता। फिर भी महिलाओं का उत्साह और सीखने की इच्छा बनी हुई है। वे लगातार नए अनुभवों से सीखते हुए आगे बढ़ रही हैं।

यह पहल अनुभवात्मक शिक्षा का एक सुंदर उदाहरण बनकर उभरी है। इससे बच्चों को केवल एक नई जानकारी ही नहीं मिली, बल्कि आत्मनिर्भरता और उद्यमिता का व्यावहारिक पाठ भी सीखने को मिला। साथ ही गाँव की महिलाओं के लिए आर्थिक सशक्तिकरण की नई संभावनाओं के द्वार भी खुले हैं। शिक्षा जब जीवन और समाज से जुड़ती है, तभी उसका वास्तविक उद्देश्य पूर्ण होता है।

भागलपुर 12-03-2026

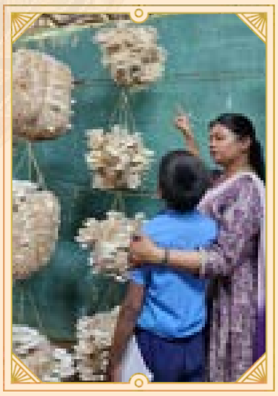

निवेदिता कुमारी
प्राथमिक विद्यालय हरिजन टोला, कलगीगंज (भागलपुर)

यत्न से परिवर्तन

प्रेरक शिक्षक

कभी-कभी किसी विद्यालय में बदलाव किसी बड़े बजट, संसाधन या योजना से नहीं, बल्कि एक शिक्षक के छोटे-से विश्वास से शुरु होता है–यह विश्वास कि हर बच्चा सीख सकता है, आगे बढ़ सकता है और अपने सपनों को साकार कर सकता है। बाँका जिले के फुल्लीडुमर प्रखंड स्थित **प्रोन्नत मध्य विद्यालय ईटहरी** में कार्यरत गणित एवं विज्ञान शिक्षक **सिद्धांत जी** की यात्रा इसी विश्वास की कहानी है।

उत्तर प्रदेश के वाराणसी निवासी सिद्धांत जी का चयन BPSC TRE 2.0 के माध्यम से हुआ। वर्ष 2024 में विद्यालय में योगदान देने के बाद उन्होंने महसूस किया कि बच्चों को केवल पढ़ाने से अधिक जरुरी है उन्हें सीखने की प्रक्रिया से जोड़ना। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान उन्होंने अनुभव किया था कि जब शिक्षा को गतिविधियों और अनुभवों से जोड़ा जाता है, तब उसका प्रभाव कहीं अधिक गहरा होता है। इसी सोच के साथ उन्होंने विद्यालय में गतिविधि आधारित शिक्षण की शुरुआत की। धीरे-धीरे विज्ञान की कक्षाएँ प्रयोगशाला का रुप लेने लगीं और गणित खेल, गतिविधियों तथा मॉडल के माध्यम से समझाया जाने लगा। बच्चे केवल उत्तर याद करने के बजाय प्रश्न पूछने लगे। उनकी झिझक कम हुई और सीखने के प्रति उत्साह बढ़ने लगा। **Project Based Learning (PBL)** का प्रशिक्षण मिलने के बाद इस परिवर्तन को नई दिशा मिली। अब बच्चे समूह में काम करते, अपने आसपास की समस्याओं को समझते, समाधान खोजते और आत्मविश्वास के साथ अपनी बात प्रस्तुत करते। कक्षा की चारदीवारी सीखने की सीमा नहीं रही।

इन प्रयासों का प्रभाव वर्ष 2026 में तब दिखाई दिया, जब SCERT पटना में आयोजित **राज्य स्तरीय PBL मेला** में विद्यालय के बच्चों द्वारा तैयार गणितीय मॉडल "**मैजिकल ट्राएंगल**" का चयन **उत्कृष्ट प्रदर्श** के रुप में हुआ। ग्रामीण परिवेश से आने वाले वे बच्चे, जिन्होंने पहले कभी लंबी रेल यात्रा तक नहीं की थी, राज्य स्तरीय मंच पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे थे। यह उपलब्धि केवल एक मॉडल की सफलता नहीं, बल्कि बच्चों में विकसित हुए आत्मविश्वास की पहचान थी।

विद्यालय में सीखने की संस्कृति को और सशक्त बनाने के लिए सिद्धांत जी ने "**ईटहरी चेतना सत्र ई-पत्रिका**" की शुरुआत की। प्रतिदिन प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका के माध्यम से बच्चों तक सामान्य ज्ञान, विज्ञान तथ्य, शब्दावली, प्रेरक प्रसंग और रोचक गतिविधियाँ पहुँचने लगीं, जिससे चेतना सत्र अधिक जीवंत और प्रभावी बन गया। इन प्रयासों का सकारात्मक प्रभाव समुदाय तक भी पहुँचा। अभिभावक-शिक्षक बैठकों में बच्चों की आत्मविश्वासपूर्ण प्रस्तुतियों ने अभिभावकों का विद्यालय के प्रति विश्वास बढ़ाया। परिणामस्वरुप बच्चों की उपस्थिति और नामांकन में वृद्धि हुई तथा कई अभिभावकों ने निजी विद्यालयों से अपने बच्चों का नामांकन हटाकर यहाँ प्रवेश दिलाया।

विद्यालय में अनुशासन और सकारात्मक वातावरण विकसित करने के लिए पूर्ण गणवेश, जूते, टाई, बेल्ट एवं पहचान-पत्र को बढ़ावा दिया गया। शैक्षणिक नवाचारों के साथ-साथ सिद्धांत जी पत्रिका संपादन, शैक्षणिक लेखन तथा PBL की **जिला स्तरीय तकनीकी टीम** में जिला गुणवत्ता शिक्षा समन्वयक **मनोहर प्रसाद सिंह** के मार्गदर्शन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

सिद्धांत जी की यात्रा यह संदेश देती है कि परिवर्तन किसी एक बड़े प्रयास से नहीं, बल्कि छोटे-छोटे यत्नों से जन्म लेता है। एक गतिविधि, एक प्रोजेक्ट, एक प्रेरक संवाद और बच्चों पर किया गया एक विश्वास–यही वे बीज हैं जो भविष्य में बड़े परिवर्तन का वृक्ष बनते हैं। "**बच्चे केवल पढ़कर नहीं, बल्कि स्वयं करके, खोजकर और अनुभव करके सबसे बेहतर सीखते हैं।**" यही विचार उनकी शिक्षण यात्रा की सबसे बड़ी पहचान है।

सिद्धांत जी
प्रोन्नत मध्य विद्यालय ईटहरी,फुल्लीडुमर (बाँका)

संघर्ष से समाज परिवर्तन तक

प्रेरक शिक्षक

दिलीप कुमार रजक की कहानी एक ऐसे शिक्षक की प्रेरक यात्रा है, जिन्होंने अभावों और सामाजिक भेदभाव के बीच संघर्ष करते हुए शिक्षा को समाज में परिवर्तन का माध्यम बनाया।

एक अत्यंत निर्धन परिवार में जन्मे दिलीप जी ने बचपन में गरीबी की कठिनतम परिस्थितियाँ देखीं। कई बार भोजन के लिए भी संघर्ष करना पड़ता था। आर्थिक तंगी के साथ-साथ उन्होंने सामाजिक छुआछूत का दर्द भी झेला। लेकिन इन परिस्थितियों ने उन्हें कमजोर करने के बजाय और अधिक दृढ़ बना दिया। मैट्रिक और इंटर की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने सिल्क कपड़ों की धुलाई और कम्पाउंडर का कार्य किया और परिवार का सहारा बने। इसी दौरान उन्होंने संकल्प लिया कि भविष्य में किसी भी बच्चे की पढ़ाई आर्थिक अभाव के कारण नहीं रुकने देंगे।

14 मार्च 2007 को उनकी नियुक्ति मध्य विद्यालय रसीदपुर दियारा में पंचायत शिक्षक के रुप में हुई। उस समय यह क्षेत्र शिक्षा और विकास की मुख्यधारा से काफी पीछे था। **बाल विवाह, अशिक्षा और सामाजिक कुरीतियाँ** यहाँ आम थीं। दिलीप जी ने घर-घर जाकर अभिभावकों को जागरुक किया, विद्यालय में अनुशासन और ड्रेस कोड लागू कराया तथा महिलाओं को अक्षर ज्ञान से जोड़ने का कार्य भी किया।

बच्चों को विद्यालय से जोड़ने के लिए उन्होंने **कठपुतली नृत्य, खेल** और **सांस्कृतिक गतिविधियों** को शिक्षण का हिस्सा बनाया। उनके प्रयासों से बच्चों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त की। साथ ही विद्यालय की उपलब्धियों को 'निपुण बिहार' और 'निपुण भागलपुर' की पीयर लर्निंग गाइड बुक में भी स्थान मिला।

पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और सामाजिक जागरुकता के क्षेत्र में भी उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया। आज भी वे अपने निजी संसाधनों से नि:शुल्क संध्याकालीन क्विज समूह चलाकर बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। उनकी सेवाओं के लिए उन्हें जिलाधिकारी, भागलपुर द्वारा जिला स्तरीय सम्मान, बिहार विधानसभा अध्यक्ष द्वारा राज्य स्तरीय सम्मान तथा प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्राप्त हो चुका है।

दिलीप कुमार रजक की यात्रा यह सिद्ध करती है कि एक समर्पित शिक्षक केवल कक्षा में ही नहीं, बल्कि पूरे समाज में परिवर्तन का वाहक बन सकता है।

दिलीप कुमार रजक
मध्य विद्यालय रसीदपुर दियारा, नाथनगर, भागलपुर

अदम्य आर्यन

आसमान छूते सपने

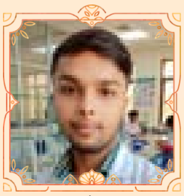

7 अक्टूबर 2006 को बिहार के बाँका जिले के एक छोटे से गाँव में जन्मे **आर्यन राज** का बचपन ऐसे परिवेश में बीता, जहाँ सपनों की उड़ान अक्सर परिस्थितियों की सीमाओं में बंध जाती है। महानगरों की चमक-दमक, बड़े कोचिंग संस्थानों और आधुनिक संसाधनों से दूर, एक साधारण किसान परिवार में पले-बढ़े आर्यन के जीवन में संघर्ष शुरुआत से ही साथी रहा। उनके पिता अशोक कुमार छोटे स्तर की खेती पर निर्भर थे, जहाँ आर्थिक स्थिरता हमेशा एक चुनौती बनी रहती थी।

इन कठिन परिस्थितियों के बीच आर्यन की सबसे बड़ी शक्ति बनीं उनकी माता लक्ष्मी देवी। वे केवल माँ ही नहीं, बल्कि उनकी पहली शिक्षिका, सबसे बड़ी प्रेरणा और भावनात्मक संबल थीं। जब भी हालात कठिन होते, माँ का विश्वास और त्याग आर्यन को आगे बढ़ने की शक्ति देता।

आर्यन ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा सरकारी विद्यालय से प्राप्त की। सीमित संसाधनों के बावजूद उनमें सीखने की गहरी जिज्ञासा और अनुशासन स्पष्ट दिखाई देता था। उनके जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ कक्षा 10 की तैयारी के दौरान आया, जब वे बाँका के तत्कालीन जिला शिक्षा पदाधिकारी (अहसन) के मार्गदर्शन में संचालित **"उन्नयन क्रैश कोर्स"** पहल से जुड़े।

यहीं आर्यन की प्रतिभा ने पहली बार विशेष पहचान बनाई। तत्कालीन डीईओ महोदय ने उनकी लगन, निरंतरता और सीखने की भूख को पहचाना। उन्होंने आर्यन को न केवल प्रोत्साहित किया, बल्कि यह विश्वास भी दिलाया कि एक साधारण ग्रामीण पृष्ठभूमि का यह छात्र भविष्य में बड़ी उपलब्धियाँ हासिल कर सकता है। यही विश्वास आर्यन के लिए जीवन बदलने वाला क्षण बन गया।

कक्षा 10 की यात्रा में आर्यन **उन्नयन क्रैश कोर्स** बैच के टॉपर बने। यह उपलब्धि केवल अंकों की सफलता नहीं थी, बल्कि इस बात का प्रमाण थी कि संघर्षपूर्ण ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाला विद्यार्थी भी श्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकता है। इसके बाद उन्होंने बिहार बोर्ड की कक्षा 10 परीक्षा में उत्कृष्ट 91% अंक प्राप्त किए।

कक्षा 10 के बाद आर्यन ने **IIT-JEE** की तैयारी शुरु की। महंगे कोचिंग संस्थानों और विशेष संसाधनों के बिना, उन्होंने आत्म-अध्ययन को अपना आधार बनाया। सीमित आर्थिक स्थिति, पारिवारिक दबाव और साधारण शैक्षणिक वातावरण के बावजूद उन्होंने अनुशासन, निरंतरता और आत्मविश्वास के बल पर तैयारी जारी रखी।

सबसे उल्लेखनीय बात यह रही कि IIT-JEE की तैयारी के साथ-साथ आर्यन ने **NEET-UG** की भी तैयारी की। ये दोनों परीक्षाएँ देश की सबसे कठिन प्रतियोगी परीक्षाओं में गिनी जाती हैं। बिना पेशेवर कोचिंग के दोनों की तैयारी करना लगभग असंभव माना जाता है, लेकिन आर्यन ने इस असंभव को संभव कर दिखाया।

कठोर परिश्रम, अनगिनत जागी रातों और अटूट संकल्प के बल पर उन्होंने **IIT-JEE** और **NEET-UG** दोनों परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। NEET-UG 2025 में उन्होंने ऑल इंडिया रैंक 5833 प्राप्त की। प्रारंभिक सपना भले ही IIT का था, लेकिन नियति ने उन्हें चिकित्सा सेवा की ओर मोड़ दिया। समाज सेवा की भावना के साथ उन्होंने MBBS को चुना और बिहार के प्रतिष्ठित संस्थान पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में प्रवेश प्राप्त किया, जहाँ वे वर्तमान में प्रथम वर्ष के MBBS छात्र हैं। आर्यन की कहानी केवल शैक्षणिक सफलता की कहानी नहीं है। यह एक माँ के त्याग, एक शिक्षक के विश्वास और एक विद्यार्थी के अदम्य संघर्ष की कहानी है। यह इस बात का प्रमाण है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, संकल्प और परिश्रम के आगे वे टिक नहीं सकतीं। पढ़ाई के अलावा आर्यन क्रिकेट प्रेमी हैं। उन्हें संगीत सुनना, नृत्य प्रदर्शन देखना और अपने प्रियजनों के साथ समय बिताना पसंद है। उनके मित्र उन्हें आत्मविश्वासी, महत्वाकांक्षी, भावनात्मक रुप से मजबूत और अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ युवा बताते हैं।

लेकिन आर्यन के सपने यहीं समाप्त नहीं होते। वे भविष्य में सिविल सेवा में जाकर IAS अधिकारी बनना चाहते हैं, ताकि समाज और राष्ट्र निर्माण में प्रत्यक्ष योगदान दे सकें। आगे चलकर वे जनप्रतिनिधि के रुप में भी कार्य करने का सपना देखते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि सच्ची सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धि में नहीं, बल्कि लाखों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में है।

बाँका के खेतों से लेकर PMCH के व्याख्यान कक्षों तक आर्यन राज की यात्रा यह संदेश देती है कि प्रतिभा किसी विशेष वर्ग की मोहताज नहीं होती। कई बार सबसे चमकदार सितारे सबसे कठिन अंधेरों से निकलकर ही आकाश को रोशन करते हैं।

आर्यन के लिए यह सफलता अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत है।

रेसलिंग का उभरता सितारा

आसमान छूते सपने

WRESTLING

बिहार के भागलपुर जिले में नाथनगर के शंकरपुर चौवनिया गाँव की सँकरी पगडंडियों से निकलकर विश्व पटल पर भारत का नाम रोशन करने वाली **चाँदनी राज** की कहानी सिर्फ एक खिलाड़ी की नहीं, बल्कि रुढ़ियों को तोड़कर आसमान छूने की महागाथा है।

जब चाँदनी का जन्म हुआ, तो वह अपने माता-पिता की पाँचवीं कन्या-रत्न थीं। जिस समाज में आज भी बेटियों के जन्म पर खुशियाँ खुलकर नहीं मनाई जातीं, वहाँ पाँचवीं बेटी के आने पर समाज में एक तथाकथित मौन पीड़ा और अस्वीकार्यता का माहौल था। बचपन से ही चाँदनी को इस सामाजिक विडंबना और उपेक्षा का सामना करना पड़ा। लेकिन ईश्वर ने उसे कभी न हार मानने वाला हौसला देकर इस धरती पर भेजा था। विपरीत और अभावों से भरी परिस्थितियों में भी उसने कभी अपने कदमों को डगमगाने नहीं दिया।

मध्य विद्यालय शंकरपुर की इस पूर्व छात्रा के भीतर छिपी कुश्ती की प्रतिभा को सबसे पहले पहचान और दिशा देने का काम किया उनके गुरुओं ने। विद्यालय की शिक्षिका शालिनी कुमारी और किलकारी के शिक्षक कुंदन कुमार व अभिमन्यु ने चाँदनी के भीतर छिपे इस कौशल को पहचाना। पिता **श्री अशोक मंडल** एवं माता **जया देवी** के लिए भी यह सफर आसान नहीं था। आर्थिक और सामाजिक तंगहाली के बीच बेटी को आगे बढ़ाना एक बड़ी चुनौती थी। लेकिन गुरुओं के मार्गदर्शन और माता-पिता के मूक समर्थन ने चाँदनी को अखाड़े में उतरने का हौसला दिया।

दिन-रात की कड़ी मेहनत, लगन और अटूट संकल्प के बल पर इस बेटी ने वह कर दिखाया जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। उसने न सिर्फ गाँव की सँकरी गलियों से निकलकर राज्य स्तर पर अपनी पहचान बनाई, बल्कि विश्व स्तर पर देश का तिरंगा लहराया। **दुबई** में आयोजित **विश्व स्तरीय अंडर-18 जिजुत्सु प्रतियोगिता 2023** में चाँदनी ने दुनिया भर के प्रतिद्वंदियों को धूल चटाते हुए कांस्य पदक पर कब्जा जमाया। इसके अलावा उसने

अंडर-16 प्रतियोगिता में भी अपनी बाजी मारकर यह साबित कर दिया कि हौसलों के आगे परिस्थितियाँ बौनी हो जाती हैं। अपनी इस ऐतिहासिक जीत को चाँदनी ने अपने गुरुओं को '**गुरु दक्षिणा**' के रुप में समर्पित कर दिया। आज वही चाँदनी, जिसे कभी समाज का एक हिस्सा बोझ समझने की भूल कर रहा था, पूरे देश और समाज का गौरव है, हमारा अभिमान है। वर्तमान में गया कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी कर रही चाँदनी आज अपने जैसे हजारों बच्चों के लिए प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत बन चुकी है।

उसकी इस ऐतिहासिक सफलता ने उसके पूरे विद्यालय और क्षेत्र का माहौल बदल दिया है। आज उस स्कूल के अन्य छात्र-छात्राएँ भी **खो-खो, कुश्ती**, **चित्रकला** और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। बच्चों में न केवल शारीरिक स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति समझ विकसित हुई है, बल्कि उनके भीतर जिन सबसे महत्वपूर्ण गुण का संचार हुआ है जो '**भारतीयता की भावना**' और 'देश के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा' है।

चाँदनी की कहानी हमें यह सिखाती है कि अगर इरादे मजबूत हों तो गाँव की पगडंडियाँ भी सीधे वैश्विक मंच की ओर ले जाती हैं। इसी नक्शे कदम पर चलते हुए हमें आगे बढ़ना चाहिए।

शालिनी कुमारी
वि० शि०, म० वि० शंकरपुर, चौवनियाँ (भागलपुर)

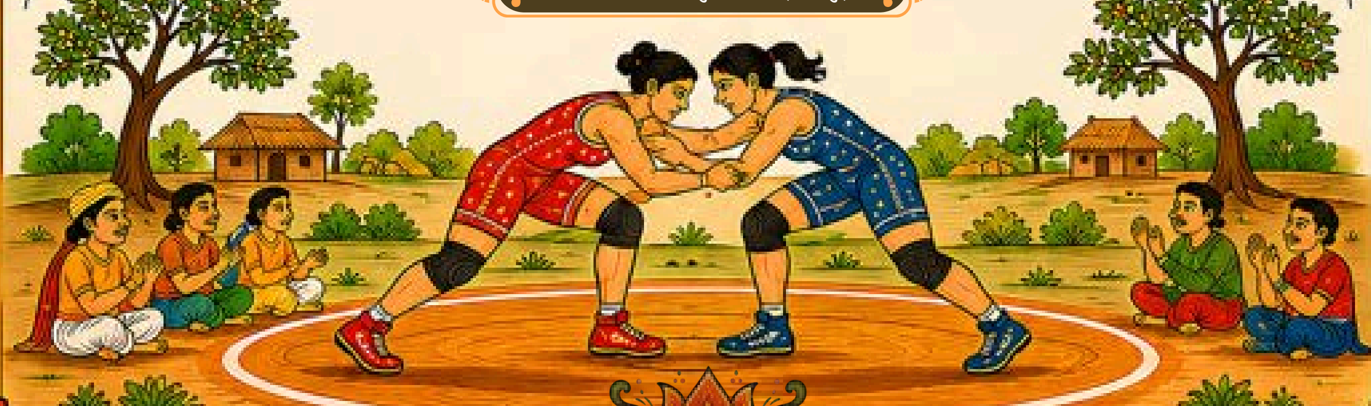

निर्माण की एक चिंगारी

अधिगम की नई दिशा

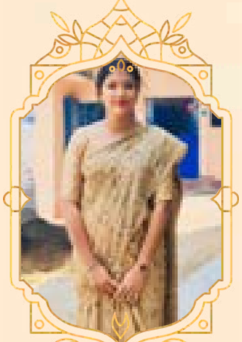

शिक्षिका **मोना लिसा** की यात्रा "**ज्वालामुखी विस्फोट**" के एक क्लासिक मॉडल के साथ शुरु हुई। पुराने गत्ते, मिट्टी, पत्थर और घर में मिलने वाले बेकिंग सोडा और सिरके के अलावा कुछ और इस्तेमाल किए बिना, उन्होंने एक रासायनिक प्रतिक्रिया की वास्तविक ताकत को अपनी आँखों से देखा। यह सिर्फ एक "**शानदार ट्रिक**" नहीं थी, बल्कि भूविज्ञान और रसायन विज्ञान का एक ऐसा जीवंत पाठ था, जिसे कोई भी किताबी चित्र कभी नहीं समझा सकता।

वास्तविक दुनिया की समस्याओं को सुलझाना:- इसके बाद, उन्होंने **सस्टेनेबिलिटी** (पर्यावरण अनुकूलता) की ओर कदम बढ़ाया और एक वाटर प्यूरीफायर (जल शोधक) बनाया। बाजार से फिल्टर खरीदने के बजाय, शिक्षिका ने फेंके हुए प्लास्टिक के गिलासों का इस्तेमाल किया और उसमें कंकड़, रेत और रुई की परतें बनाईं, जिन्हें उनके छात्र स्कूल के पिछले हिस्से से ढूंढकर लाए थे। उनके द्वारा मटमैले पानी को प्रकृति की इन परतों से छनकर साफ होते देखना इस बात का सबूत था कि "**कम लागत वाले साधन**" अक्सर "**प्रकृति के अपने औजार**" ही होते हैं।

विज्ञान से परे:- मुद्रा विकास पीबीएल (**प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा**) सिर्फ विज्ञान के लिए नहीं है। उनके सबसे चुनौतीपूर्ण प्रोजेक्ट्स में से एक था—मुद्रा विकास का एक वर्किंग मॉडल बनाना। यानी, समय के साथ बदलते "मूल्य" को आप कैसे दिखा सकते हैं?

- सबसे पहले उन्होंने वस्तु विनिमय प्रणाली (**Barter System**) को दर्शाने के लिए अपनी रसोई से कुछ अनाज के दानों का उपयोग किया।
- फिर चॉकलेट के रैपर की मदद से चांदी और तांबे के सिक्के बनाए।
- इसके बाद शिक्षिका मोनालिसा ने एटीएम, यूपीआई और फोनपे को दर्शाने के लिए कागज पर रेखाचित्र बनाए, जो आज के समय की आधुनिक मुद्रा यानी '**प्लास्टिक मनी**' और '**डिजिटल पैसे'** को दिखाते हैं।

छात्रों के नाम शिक्षिका का एक संदेश:- शिक्षिका मोना लिसा अपने छात्रों को प्रोत्साहित करती हुई कहती हैं कि, एक गत्ते का डिब्बा या मुट्ठी भर बीज उठाएँ और कुछ नया बनाना शुरु करें। किसी फैंसी प्रयोगशाला का इंतजार न करें। नवाचार के लिए भारी-भरकम बटुए की जरुरत नहीं होती। इसके लिए सिर्फ एक जिज्ञासु दिमाग और अपने हाथों को थोड़ा गंदा यानी कि मेहनत करने की इच्छा की जरुरत होती है। आखिरकार, दुनिया की सबसे बड़ी वैज्ञानिक खोजें कभी भी एकदम सटीक समीकरणों के साथ शुरु नहीं हुईं। वे हर उस वक्त की गड़बड़ियों और '**प्रयास और त्रुटि**' से शुरु हुईं, जब कोई मॉडल काम नहीं करता था। यदि कोई मॉडल सफल नहीं होता, तो वह असफलता नहीं है, बल्कि अगली बार उसे और बेहतर तरीके से करने का एक सबक है। जब हम अपने हाथों से चीजें बनाते हैं, तो हमारे भीतर इस दुनिया के प्रति एक गहरा सम्मान पैदा होता है। हमारे ग्रह की जटिल प्राकृतिक प्रणालियों से लेकर हमारे समाजों को चलाने वाले आर्थिक ढांचों तक।

तो आइए बच्चों, गलतियाँ करने के डर से खुद को आजाद करें। उस कबाड़ के सामान को उठाएं, अजीबो-गरीब और नादानी भरे सवाल पूछें, और अपनी कल्पना को उड़ान भरने दें। आप यह देखकर हैरान रह जाएंगे कि थोड़ी सी सूझ-बूझ और संसाधनशीलता आपको कहाँ से कहाँ ले जा सकती है।

"प्राचीन काल के **वस्तु विनिमय** से लेकर आधुनिक तकनीक तक, मानव प्रगति का इतिहास उन लोगों द्वारा लिखा गया है जिन्होंने अपने पास उपलब्ध हर छोटी-बड़ी चीज के साथ प्रयोग करने का साहस किया।"

नवाचार एक मानसिकता है, कोई विशेषाधिकार नहीं। आइए अपने स्कूल को कुछ नया बनाने, उसका परीक्षण करने और खोजने की आवाजों से गूंजने दें। अपनी पाठ्यपुस्तकों के अध्यायों को सिर्फ पढ़ें नहीं, बल्कि उन्हें हकीकत में बदलें; अपनी चीजें उठाएं, अपनी जिज्ञासा को खुलकर सामने लाएं और आइए मिलकर भविष्य का निर्माण शुरु करें।

हम अक्सर अपनी सफलता को अपने रिपोर्ट कार्ड के नंबरों से नापते हैं, लेकिन वास्तविक शिक्षा वह है जो हमारी आँखों में एक चमक पैदा कर दे। जब हम कुछ नया बनाते हैं, तो यह एक साधारण विचार को एक असाधारण वास्तविकता में बदलने के साहस के बारे में होता है। क्योंकि दिन के अंत में, दुनिया को परफेक्ट स्कोर लाने वाले बच्चों से भरे कमरों की जरुरत नहीं है। इसे सपने देखने वालों की एक ऐसी पीढ़ी की जरुरत है जो कबाड़ के एक टुकड़े को भी देखे तो उसमें आने वाले कल का ब्लूप्रिंट तलाश ले।

मोना लिसा
प्रो० म० वि० खैरा, शाहकुंड (भागलपुर)

प्रोजेक्ट आधारित अधिगम

अधिगम की नई दिशा

दो नन्हें वैज्ञानिक जो कि **आदर्श मध्य विद्यालय, शम्भुगंज** के छात्र हैं। नाम है- **अनिका श्री** (वर्ग अष्टम) एवं **प्रशांत राज** (वर्ग सप्तम) दोनों एक ही परिवार के जिज्ञासु बच्चे हैं- खोजी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भरपूर। इन दोनों बच्चों के पिता महेश विश्वकर्मा शंभूगंज के एक प्राइवेट कॉलेज में फोर्थ ग्रेड कर्मी के रुप में कार्यरत हैं। परिवार में हस्तकारीगरी की परंपरा पहले से ही विद्यमान है। जब विद्यालय में PBL प्रोजेक्ट शुरु हुआ तो दोनों छात्रों की प्रतिभा निखर कर सामने आई। विज्ञान में 'ध्वनि' अध्याय पर कार्यविधि के दौरान इन छात्रों की अभिलाषा देखते ही बनती थी।

अनिका और **प्रशांत** की अभिलाषा रहती थी कि कैसे ध्वनि की अवधारणाओं को सरल रुप से समझाएं। उनके लिए सबसे बड़ी कठिनाई थी कि यह ऊर्जा शक्ति के स्रोत कभी-कभार अदृश्य कैसे होते हैं। यहाँ बच्चों की यह खोज रही कि दो वस्तुओं के टकराने से कंपन होती है। कंपन की आवृत्ति एवं आयाम पर ही ध्वनि तारत्व एवं प्रबलता का निर्धारण होता है। प्रकृति के कुछ स्वाभाविक ध्वनियों को हवा, पानी एवं अन्य चीजों के कंपन से उत्पन्न करना, इन बच्चों के प्रोजेक्ट की एक ऐसी विशेषता थी, जिसमें बाद में तत्कालीन बिहार राज्य के **शिक्षा मंत्री** एवं **शिक्षा विभाग, बिहार** के **अपर मुख्य सचिव** ने भी पटना के **PBL मेले** में इन बच्चों के क्रियाकलाप को देख कर इनकी खूब प्रशंसा की।

इनके अन्य अन्वेषणों में वाशिंग मशीन के खुरदरे पाइप को यदि आप तेजी से हवा में घुमाएं तो हवा पाइप में कम दाब के कारण तेजी से पास होने लगती है और बाँसुरी-सी आवाज उत्पन्न होती है। चाय के कप में लगे एक धागे को अपने हाथ पर थोड़ा पानी लगाकर खींचने पर कप और धागे के बीच उत्पन्न कंपन तेजी से कप के ऊपर हवा को एक दिशा मे कंपित करते हुए बतख की आवाज प्रस्तुत कर देती है। दीवार पर पुट्टी लगाने वाले लोहे के आयताकार पट्टी के ऊपर दोनों ओर से हाथों की मदद से दबाव कम या अधिक करने पर कंपन ध्वनियों से गौरैया पक्षी की आवाज सुनाई देती है। बैलून में षट्-कोण आकृति वाले नट को रखकर हवा भरकर लगातार घुमाने पर कम्पित ध्वनियाँ भौंरों सा गुंजायमान आवाज स्पष्ट रुप से उत्पन्न होती है। कई धागों की तार में एक अन्य धागे से गाँठ लगाने पर हम एक पॉडकास्ट टेलीफोन बना सकते हैं, जिसमें एक व्यक्ति बोलेगा और कई व्यक्ति नेटवर्क में उस एक ध्वनि को सुन पाएंगे साथ ही कागज के कप में लगे धागे को घर्षण करने से मेघ-बिजली की गर्जना होती है। यह सभी कार्य बच्चों की इनोवेटिव चिंतन को दर्शाता है।

शम्भुगंज प्रखंड स्तर पर विज्ञान मेले भी मध्य विद्यालय कमरडीह के प्रिंसिपल **श्री राजेश कुमार** ने भी इनकी ध्वनि से संगीत में जल तरंग के द्वारा आवृत्ति को समझा देने के प्रयास की खूब सराहना की। बाँका डायट में भी जिला स्तरीय पीबीएल मेले में भी मौजूद बाँका के जिला शिक्षा पदाधिकारी **श्री देव नारायण पंडित**, डायट के प्रिंसिपल **श्री अनुज कुमार वर्मा** एवं गुणवत्ता शिक्षा समन्वयक, समग्र शिक्षा कार्यालय, बाँका **श्री मनोहर प्रसाद सिंह** के द्वारा जिला में विज्ञान के लिए प्रथम पुरस्कार अनिका एवं प्रशांत को मिला।

राज्यस्तरीय PBL मेले में **SCERT पटना** परिसर के मैदान में बिहार राज्य के 38 जिले के विद्यार्थियों के द्वारा अद्भुत प्रदर्शनी के बीच भी दोनों विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा से वहाँ के दर्शकों को खूब आश्चर्यचकित किया एवं तत्कालीन बिहार शिक्षा मंत्री श्री सुनील कुमार जी के सामने भी अपने वैज्ञानिक अनुभव को प्रदर्शित किया।

अनिका इस वर्ष मार्च में राष्ट्रीय आय सह मेधा छात्रवृत्ति परीक्षा में भी उत्तीर्ण हुई और स्कूल में PBL के प्रत्येक माह में MIP के आयोजन मे इसका श्रेय रहता है। इन बच्चों का कहना है कि 'हम यदि यह अनुभव प्राप्त कर सकते हैं तो विद्यालय के अन्य छात्रों को यह अनुभव होना सम्भव है और इसके प्रभाव से बच्चों का ज्ञान वर्धन होगा'।

आदर्श मध्य विद्यालय, शम्भुगंज के दीक्षान्त समारोह में विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने इन बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि '**आप सीखने एवं प्रदर्शित करने की प्रतिभा को कभी कुंठित न होने दीजिएगा**।'

सुबीर देवव्रत
आदर्श मध्य विद्यालय शम्भुगंज (बाँका)

उम्मीदों की पहली किरण

साहित्य सरिता

रोहित आनंद

वर्ग - दशम

बाँका (डी. मेहरपुर)
बिहार

पूर्व दिशा में रंग सुनहरा,
बिखरा प्रकृति का शृंगार,
उठा धरा का कोना-कोना,
आया भोर लिये उपहार।

लाल किरण की चूनर ओढ़े,
आया सूरज मुस्काता,
बिखर गई सोई गलियों में,
रोशनी का सुंदर नाता।

पंछी बोले ताल मिलाकर –
“जागो, सपने मत टालो,”
कहती हवाएँ- “धैर्य रखो तुम,
अपने मन का दीप सँभालो।”

कल जो बीता, धूल हुआ वो,
आज नयी राहें ले आई,
हर दिन देता अवसर ताज़ा,
मंज़िल ने बाँहें फैलाई।

चलो उठो तुम, कदम बढ़ाओ,
मन में हो उजियारा-नीला,
नयी सुबह का गीत यही है –
हर पल हो जीवन रंगीला

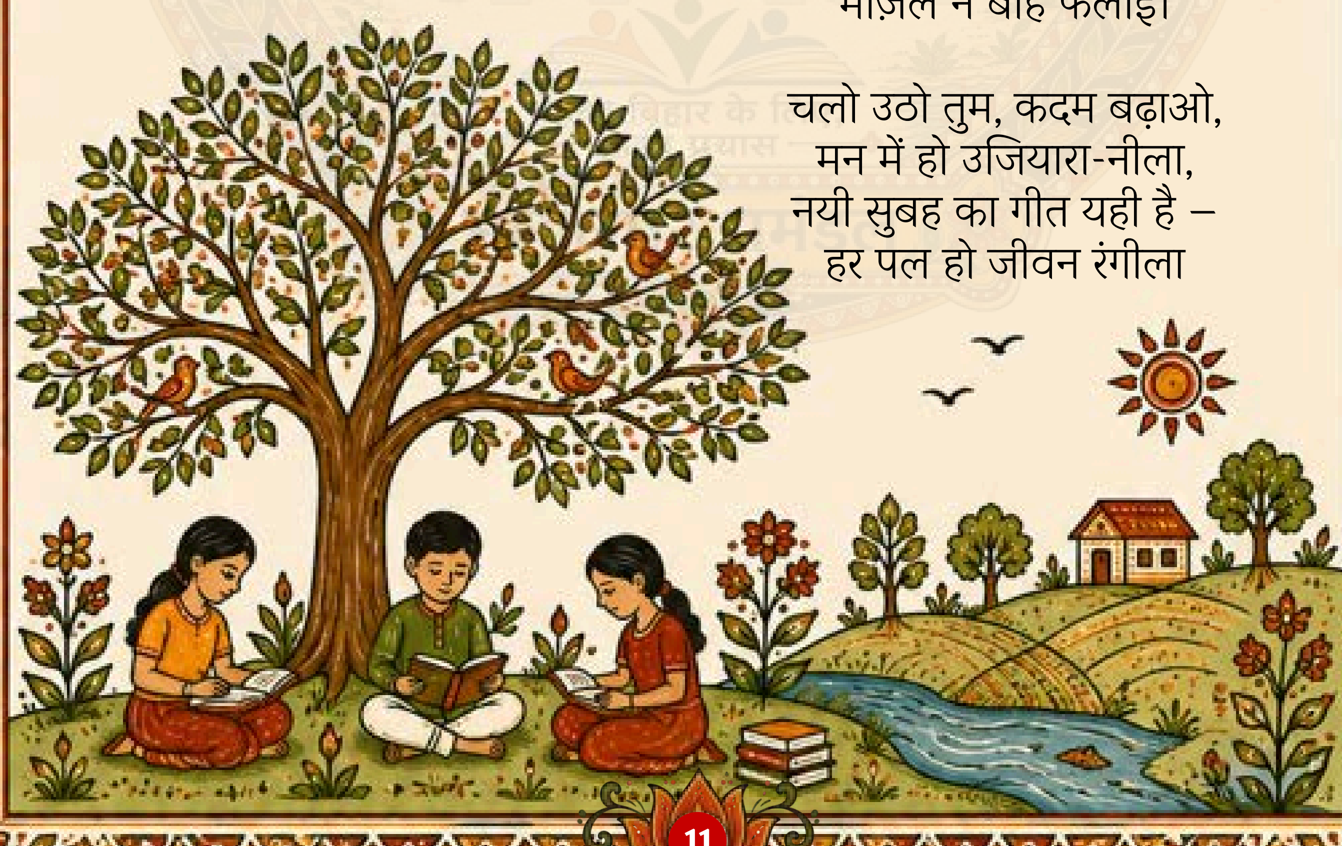

हौसलों की उड़ान

साहित्य सरिता

माना कि आज ग़मों का गहरा साया है,
वक्त ने तुम्हें थोड़ा और आज़माया है।
आँखों में आँसू और दिल में बोझ भारी है,
पर याद रखो, अभी तेरी लड़ाई जारी है।

दुःख तो एक मेहमान है, जो आता-जाता है,
यह हमें टूटकर फिर से जुड़ना सिखाता है।
मिट्टी के नीचे दबे बीज को भी दर्द होता है,
बनने को कल्पवृक्ष उसके अंतस में सोता है।

ठहर मत! अभी सफ़र का अंत नहीं,
दुःख तो पतझड़ है, स्थाई वसंत नहीं।
अपनी तकलीफ़ों को अपनी मशाल बना ले,
तू खुद अपनी किस्मत को एक नई ढाल बना ले।

थक गए हो तो बस ज़रा-सा सुस्ता लो,
पर हार मानकर खुद को न तुम मिटा लो।
हौसलों की उड़ान में अभी बहुत जान बाकी है,
तेरी जीत की इस दुनिया में अभी नाम बाकी है।

रश्मि कुमारी

वर्ग - नवम

उच्च माध्यमिक विद्यालय
रामचुआ शंभूगंज

बेटी को क्यों समझें बोझ?

साहित्य सरिता

बेबी कुमारी

वर्ग-अष्टम

मध्य विद्यालय भनरा,चांदन, बाँका

आओ मिलकर करें विचार,
बेटे को क्यों लाड़ जताए?
बेटी को क्यों समझें बोझ?

पर बेटी ही है जग में न्यारी,
बेटी ने ही संसार बनाया,
फिर भी समझे न इस बात को लोग!

बेटी को क्यों समझे बोझ?
थोड़ी सी क्या होती बड़ी ,
चढ़ा देते हैं शादी की सूली
ऐसा ही होता है जग में,

पागल हैं वो सारे लोग
बेटी को जो समझें बोझ
बेटी को क्यों समझे बोझ?

मात-पिता को ईश्वर मानें

साहित्य सरिता

देवकांत मिश्र 'दिव्य'

अध्यापक

म0 वि0 धवलपुरा,
सुल्तानगंज, भागलपुर

मात-पिता को ईश्वर मानें।
इन्हें हृदय से सच्चा जानें।।

नित्य सवेरे हम जग जाएँ।
चरणों में हम शीश झुकाएँ।।
सरल नियम शुचि मन में ठानें।
मात-पिता को ईश्वर मानें।

चरण कमल हैं इनके पावन।
अंक सर्वदा परम सुहावन।।
श्रेष्ठ शुभ्रता मन में छानें।
मात-पिता को ईश्वर मानें।

प्रतिदिन सत शिव भाव सिखाते।
गुरु की आज्ञा श्रेष्ठ बताते।।
मन के भावों को पहचानें।
मात-पिता को ईश्वर मानें।

मैं दुर्योधन को फिर से जियूँगा

साहित्य सरिता

कबीर रॉय

विद्यालय अध्यापक

मध्य विद्यालय निमिया,
अम्हारा, बेलहर, बाँका

कृष्ण तो सब सोचते हैं,
मैं दुर्योधन को फिर से जियूँगा।

क्रोध को कलेजे में अबकी नहीं लूँगा,
व्यंग को दिल पर अबकी नहीं लूँगा,
पांचाली से प्रतिशोध अबकी नहीं लूँगा,
शकुनी की कुटिलता अबकी नहीं लूँगा,

कृष्ण तो सब सोचते हैं,
मैं दुर्योधन को फिर से जियूँगा।

कृष्ण को सखा , कर्ण को सखा समझूँगा,
युधिष्ठिर को सगा, अर्जुन को सगा समझूँगा,
द्रोपदी को उपहार में ,चादर मैं दूँगा,
सभा में श्रेष्ठ जो , सदा आदर दूँगा,

कृष्ण तो सब सोचते हैं,
मैं दुर्योधन को फिर से जियूँगा।

फिर से जियूंगा मैं दुर्योधन,
शालीनता से सजा हुआ दुर्योधन,
वचन से बंधा हुआ दुर्योधन,
नहीं पहले जैसा असत्य दुर्योधन,

कृष्ण तो सब सोचते हैं,
मैं दुर्योधन को फिर से जियूँगा।

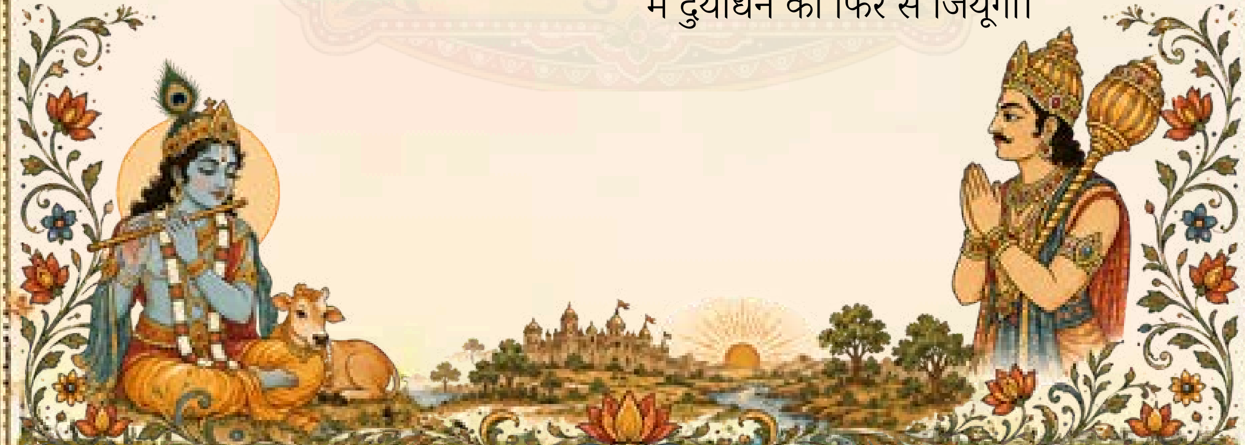

नवरंग उमंगें जाग उठीं

साहित्य सरिता

'काज़िम' अहमद अशरफी

विशिष्ट शिक्षक

उर्दू म० वि० शाहपुर तमौनी, नाथनगर, भागलपुर

नवरंग उमंगें जाग उठीं शिक्षा के तारणहारों में ।
'नव-यत्न' सदा ही चमकेगा दीपक बनकर अँधियारों में।

अक्षर-अक्षर नित्य ज्ञान खिले बच्चों के कोमल से मन में,
सपनों के फूल महकते हैं अब शिक्षा के गलियारों में।

शिक्षा के नाविक उतरे हैं सागर में, हे जग निर्माता!
कोशिश है पार लगाने की तुम शक्ति दो पतवारों में

आकाश को छुने की खातिर, ये हाथ बढ़ाया है हमने,
मेरी किस्मत का तारा भी होगा अम्बर के तारों में

'काज़िम' शिक्षा की लौ से ही मिट सकते हैं तम के बादल
ये बात सुनहरे अक्षर से लिख दो जाकर दीवारों में

हम नादान परिंदे हैं

साहित्य सरिता

विकास कुमार साव

प्रधान शिक्षक

प्रा० वि० चांदोडीह, बेलहर, बाँका

हम नादान परिंदे हैं।
बहती हवा के झोंकों में
बेख़ौफ़ से उड़ते हैं।

कदग़न लगाए भले,दिलों में-
बेताबियाँ हैं उड़ान की
फिराक़ में है शिकारी,
पर फ़ितरत है हमारी
जिंदगी से हरपल जंग लड़ते हैं।
हम नादान परिंदे हैं।
बहती हवा के झोंकों में
बेख़ौफ़ से उड़ते हैं।

मंजर मना रहे हों मातम
बयाबाँ पर जब ना हो मेहरबां कोई
इस दरम्यां तिलस्म टूटते हैं सन्नाटों के
अपनी गुंजन की तासीर से
हम फ़िज़ा में रंग भरते हैं।
हम नादान परिंदे हैं।
बहती हवा के झोंकों में
बेख़ौफ़ से उड़ते हैं।

परेशाँ न हो हमारी हसरतों से,
अरमाँ मचलते हैं दिल में ख़्वाब बनकर।
कि सुकूँ से सोऊँ आसमाँ के पहलू में,
जगूँ तो रोशन करूँ आफ़ताब बनकर।
चराग़-ए-ज़ीस्त हर पल मेरी आँखों में जलते हैं।
हम नादान परिंदे हैं।
बहती हवा के झोंकों में
बेख़ौफ़ से उड़ते हैं।

इंतिख़ाब करते हम उन्हें,
जो रुबरु हों प्यार से।
प्यार सिखाता हरदिल-अज़ीज़ बनना,
फ़ासले बढ़ते हैं तकरार से।
हर दिल को हम मोहब्बत का पैग़ाम देते हैं।
हम नादान परिंदे हैं ।
बहती हवा के झोंकों में
बेख़ौफ़ से उड़ते हैं।

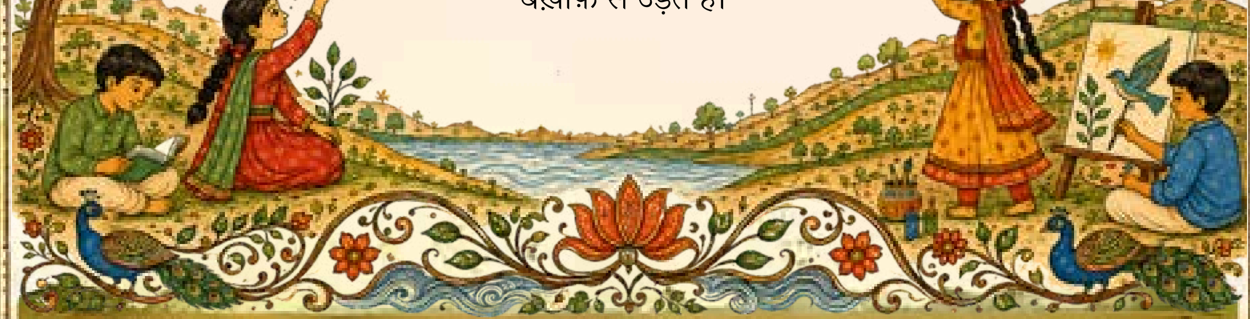

हम्में छी भैया गाँव कें रहवैया

डॉ0 विकास कुमार सिंह
प्रधानाध्यापक
उच्च माध्यमिक विद्यालय
रामचुआ, शंभूगंज, बाँका

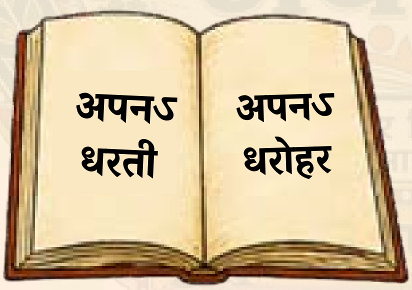

खेतों कें आरों पे
आरो खम्हारों पे
गंगा कें धारों पे
कोशी कछारों पे
चढ़लों छी तारों पे
सुतलों छी लारों पे
माड़ा पे मिलतै तीओन कैहिया ।
हम्में छी भैय्या गाँव कें रहवैया ।।

धुसरैलों साँझ छै
गदरैलों बिहान छै
खेतो खलिहान छै
भरलों दलान छै
झुमलों किसान छै
ठोरों पे तान छै
बहै बिहान रोजे खुला पुरवैया ।
हम्में छी भैया गाँव कें रहवैया ।।

जीवन निराला छै
रस्सी कें ताला छै
गोड़ों में छाला छै
दुक्खों कें ढाला छै
मुश्किल निवाला छै
पीड़ा कवाला छै
तैहयो चलै छै जीवन कें पहिया।
हम्में छी भैया गाँव के रहवैया ।।

परवो त्योहारों में
देहरी दीवारों में
बनों बहियारों में
मारों सम्हारों में
रोगी बिमारों में
बीच मझधारों में
हमरऽ छै एक्के बाबा खेवैय्या ।
हम्में छी भैया गाँव कें रहवैया ।।

अजगैबीनाथ धाम - सुल्तानगंज

अजगैबीनाथ मंदिर (Ajgaivinath Temple) बिहार के भागलपुर जिले के सुल्तानगंज में गंगा नदी के बीच एक विशाल चट्टान पर स्थित एक प्राचीन और स्वयंभू शिव मंदिर है। इसे श्रावणी मेले का मुख्य आरंभ बिंदु माना जाता है, जहाँ से लाखों श्रद्धालु गंगाजल भरकर बाबा धाम (देवघर) के लिए पैदल यात्रा शुरु करते हैं। अजगैबीनाथ धाम की उत्पत्ति संभवतः त्रेता युग में हुई थी। किंवदंतियों के अनुसार भगवान राम ने रावण के विरुद्ध युद्ध से पहले यहां आकर शिव की पूजा की थी ।

प्राचीन ऋषियों के लिए यह मंदिर ध्यान का स्थल भी रहा है। यहां का श्मशानघाट भी अघोरी तांत्रिक के लिए सिद्ध क्षेत्र जैसा है। **उत्तरवाहिनी गंगा** के अविरल धारा के बीचों-बीच यह मंदिर चट्टानों के उपर है, जो वास्तुकला का एक अद्भुत नमूना है। पहाड़ों पर नक्काशीदार प्रतिमाएं उकेरी हुई हैं। इस मंदिर के जो प्रधान पुजारी (महन्त) होते हैं, वे कभी भी बाबा बैद्यनाथ धाम देवघर में जल अर्पित नहीं कर सकते हैं। पहले यह मंदिर भी बिहार राज्य का हिस्सा था; वर्तमान में यह मंदिर देवघर जिला में है, जो झारखण्ड राज्य के अधीन है। हाल ही के दिनों में अजगैबीनाथ धाम के वर्तमान मंहत श्री प्रेमानंद गिरि जी ऐसा करने निकले तो उनके आंखों की रोशनी पर प्रभाव पड़ने लगा। इस बात की पुष्टि स्वयं महाराज महंत जी ने मीडिया को बताया। सर्वप्रथम यहां के जल से ही बाबा बैद्यनाथ को नहलाया जाता है। इसलिए ऐसी मान्यता है कि जो भी इस अजगैबीनाथ धाम मंदिर का प्रधान सेवक होगा, उन्हें वहां जाकर पूजा- अर्चना करने की कोई जरुरत नहीं है। धर्म की इस नगरी से सालों भर लोग जल अर्पित करने को जाते रहते हैं। ऐसा एक भी दिन नहीं कि यहां के जल को बाबा बैद्यनाथ के उपर अर्पित नहीं किया जाता है। **सावन (श्रावण)** माह में तो यहां देश-विदेश के लोग कांवर यात्रा के लिए आते हैं और पूरा शहर बोलबम के नारों से गुंजित हो उठता है। चारों तरफ भगवा रंग में कांवरिया का जत्था दिखाई देता है। दिलचस्प बात तो यह है कि पूरे एक माह का यह कांवर यात्रा का मेला गंगा-जमुनी तहज़ीब को निभाने के लिए सभी समुदायों के लोग आए हुए शिव भक्तों की सेवा में चौबीसों घंटे लगे रहते हैं। दुकानें दिन-रात खुली रहती हैं । अतिथि देवो भवः के मंत्र की एक मिशाल देखने को मिलती है। सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओं के द्वारा भी पग-पग पर शिव भक्तों के सुख-सुविधाओं के लिए भरपूर योगदान दिया जाता है। **भागलपुर**, **मुंगेर**, और **बाँका** जिला प्रशासन एवं यहां के आम-अवाम द्वारा निःस्वार्थ, केवल सेवा भाव से दिन-रात मेहनत की जाती है। वहीं प्रत्येक दिन मां गंगा की अविरलता और निर्मलता के लिए गंगा महाआरती के आयोजन को देख कांवरिया शिव भक्त भी नाचने लगते हैं। **डाक कांवड़** की यात्रा का संकल्प बिना रुके चौबीस घंटे में पूरा करने की आस्था एवं कष्टी बम को अपने लम्बाई से जमीन नापते हुए भोलेनाथ दरबार में अपनी उपस्थिति दर्ज करने मे जो अनुभूति, खुशी, उमंग एवं लहर उनके चेहरे पर रहती है; देखते बनता है। उत्तर वाहिनी गंगा का जल बाबा बैद्यनाथ पर अर्पित करने का महत्व ही अलग है। विश्वास और सत्य निष्ठा से जो भी मन्नत मांगते हैं; वह निश्चित प्राप्त होता है। इसलिए श्रावण के एक माह का विशेष महत्व है। शहर भगवा रंग में पट जाता है। इतना ही नहीं यदि आप गंगा के किनारे से एक जलपात्र बाबा के नाम से हाथों-हाथ आगे बढ़ा देंगे तो आपके पहुंचने से पहले आपका जलपात्र बाबा तक पहुंच जाएगा।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

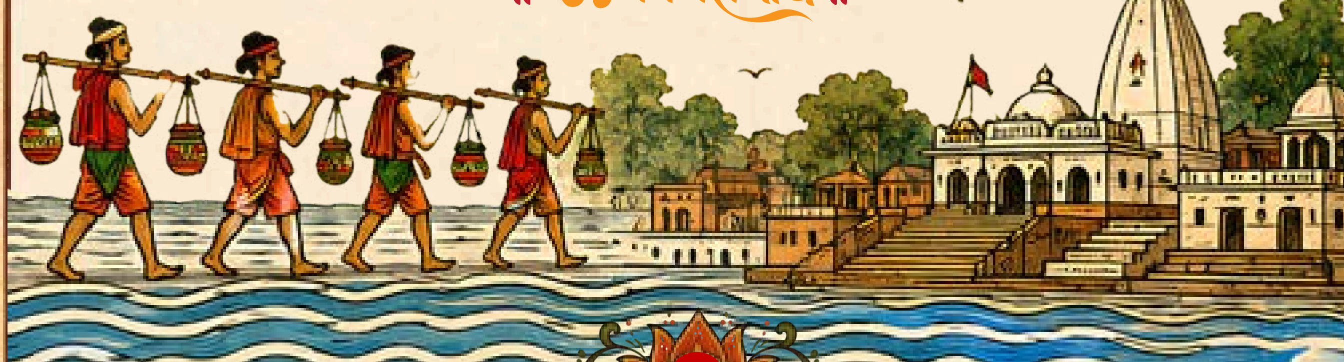

अजगैबीनाथ धाम - सुल्तानगंज

मृदगौरव : अपनऽ धरती अपनऽ धरोहर

क्योंकि मानव श्रृंखला की इतनी लम्बी यात्रा दुनिया में और कहीं भी देखने को नहीं मिलेगी। 105 किलोमीटर की यह पावन कांवर यात्रा पैदल पथ से जुड़ा है। वैसे तो कुछ लोग सड़क मार्ग और कुछ रेलमार्ग से भी जाते हैं। इस यात्रा में जो शिव भक्त आते हैं वे पहले बाबा **अजगैबीनाथ** धाम में विराजमान शिव के उपर जल चढ़ाते हैं तभी वे बाबा रामेश्वर बैद्यनाथ धाम के लिए प्रस्थान करते और वहां पहुंच कर सर्वप्रथम शिव-गंगा स्नान करने के उपरांत जल चढ़ाने मंदिर में प्रवेश करते हैं फिर मंदिर में **पंचशूल** दर्शन करते हैं। अजगैबीनाथ धाम अपने प्राचीन स्वरुप के साथ-साथ वर्तमान स्वरुप को भी समेटे हुए है। यह मंदिर अपने जीवन यात्रा का दर्शन कराता है। अजगैबीनाथ धाम मंदिर का एक दुर्लभ चित्र कोलकाता के विक्टोरिया पैलेस में भी लगाया गया है। मंदिर समय और काल खंड के साथ-साथ बदलता जा रहा है। इस मंदिर के अनेक चित्र आज गूगल पर देखे जा सकते हैं ।

अजगैबीनाथ धाम नाम क्यों पड़ा ?

ऐसी मान्यता है कि अजगब धनुष भगवान शिव का धनुष है। इसी अजगब से अजगैबीनाथ धाम मंदिर का नाम पड़ा।

कुछ मान्यताओं के अनुसार, कहा जाता है कि यह स्थान "**अजगैवी ऋषि**" की तपोभूमि थी । उन्हीं के नाम पर मंदिर का नाम "**अजगैबीनाथ**" पड़ा। यहाँ भगवान शिव की पूजा बहुत प्राचीन काल से होती आ रही है।

उत्तरवाहिनी गंगा की विशेषता !

सुल्तानगंज में गंगा दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। हिंदू धर्म में उत्तरवाहिनी गंगा को अत्यंत पवित्र माना जाता है। इसी कारण यहाँ स्नान और जलाभिषेक का विशेष महत्व है।

प्रमुख पर्व और मेले

1. श्रावणी मेला
2. महाशिवरात्रि
3. सावन सोमवार
4. गंगा दशहरा

इन सभी त्योहारों में यहां आस्था का जनसैलाब उमड़ता है। यहां के बहुत सारे लोगों को इसी आस्था की वजह से रोजगार भी मुहैया होता है।

शंकर कुमार राम (स्नातक शिक्षक)
मध्य विद्यालय मसदी, सुल्तानगंज पूर्व, भागलपुर

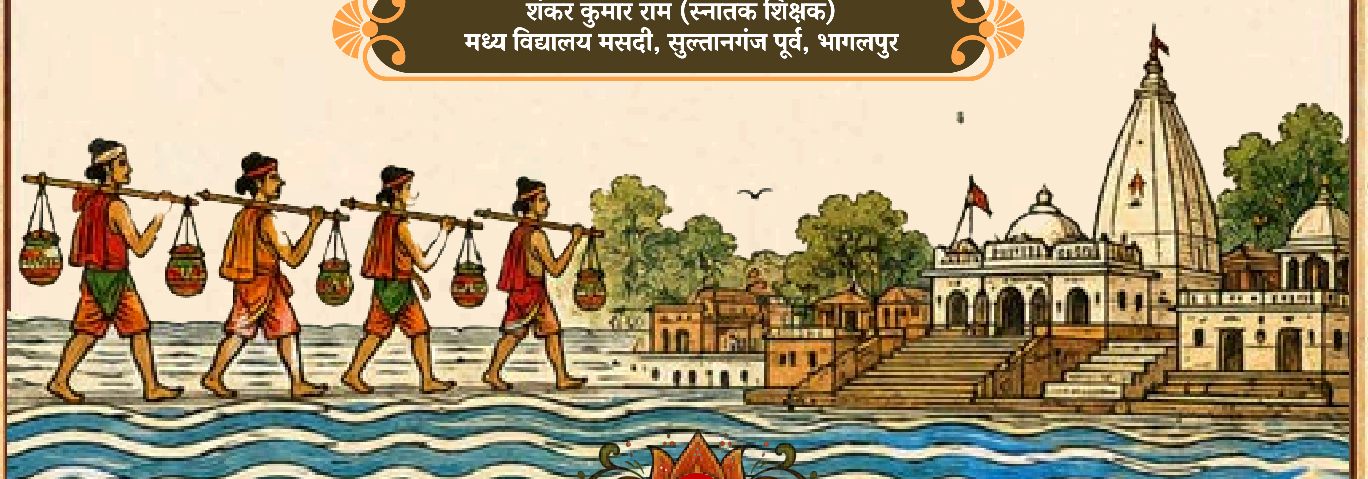

मंदार पर्वत: बिहार की आत्मा का जीवित पाठ

मृदगौरव : अपनऽ धरती अपनऽ धरोहर

मंदार पर्वत केवल एक पर्वत नहीं, बल्कि उस दौर की अंतिम स्मृति है, जहाँ जीवन में कृत्रिमता की जगह वास्तविकता थी। यह चट्टानों पर लिखी एक ऐसी कहानी है, जिसे बिना शब्दों के भी पढ़ा जा सकता है। पहले लालटेन की रोशनी कम थी, लेकिन रिश्तों और चेतना की रोशनी अधिक थी। आज तकनीक ने दुनिया को जोड़ दिया, लेकिन मनुष्य को उसकी मिट्टी, उसके जंगल, उसकी चौपाल और उसके पर्वतों से दूर कर दिया है। मंदार पर्वत आज भी मौन खड़ा है, मानो कह रहा हो–

"सुविधाएँ बढ़ीं हैं, पर सुकून घट गया है।" और शायद यही इस विचार का सबसे गहरा संदेश है कि मनुष्य चंद्रमा तक पहुँच गया, मगर अपने गाँव की आत्मा से दूर हो गया।

आस्था, इतिहास और शिक्षा का संगम:- मंदार हिल बाँका जिले में स्थित लगभग **700–750 फीट** ऊँचा पहाड़ है, जिसे बिहार पर्यटन विभाग राज्य के प्रमुख दर्शनीय और धार्मिक स्थलों में गिनता है। यहाँ हिंदू और जैन परंपराओं से जुड़े मंदिर और प्रतीक दोनों ही मौजूद हैं, जो इसे एक साझा सांस्कृतिक-धार्मिक केंद्र बनाते हैं।

इस दृष्टि से मंदार को "**खुला कक्षा-कक्ष**" (Open Class - Room) माना जा सकता है, जहाँ विद्यार्थी किताबों के बाहर जाकर देख सकते हैं कि इतिहास, धर्म और आस्था ज़िंदा कैसे रहते हैं। शैक्षणिक भ्रमण द्वारा स्कूली छात्र मंदार पर्वत पर जाकर इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को समझ सकते हैं।

चट्टानों में दर्ज एक नैतिक संवाद:- मंदार की चट्टानों पर समय की धूल नहीं, बल्कि सभ्यताओं की साँसें जमी हुई प्रतीत होती हैं। जहाँ ऋषियों ने तप किया, जहाँ देवताओं और असुरों की कथा लोकगीत बनकर गूँजी, वहाँ हर पत्थर मानो कहता है कि मानव बदल गया, पर सत्य अब भी वहीं खड़ा है।

इस ख़ामोश नफ़रत का संबंध समुद्र मंथन की कथा से जुड़ता है–जब देव और असुर ने मिलकर **मंदार पर्वत** को मथनी बनाकर अमृत की खोज शुरु की। यह एक ऐसा सहयोग था, जहाँ दो विरोधी शक्तियाँ एकमात्र लक्ष्य–अमृत पाने के नाम पर एक-दूसरे के साथ जुड़ी। उस उद्देश्य के लिए वे सब कुछ त्यागने और सहयोग करने को तैयार हो गए: शत्रुता, अहंकार, स्वार्थ। यही तो समुद्र मंथन का सबसे बड़ा संदेश है–अमृत की खोज सिर्फ़ ज्ञान या बल से नहीं, बल्कि सहयोग, त्याग और अंदर की शांति से होती है। आज का संसार जो तकनीक, शक्ति और प्रतिस्पर्धा पर इतना यकीन रखता है, उसे भी यही याद दिलाना चाहिए कि वास्तविक अमृत-सा शांति और सुकून तभी मिलता है, जब मनुष्य आपसी द्वेष को छोड़कर एक-दूसरे की समझ और सहयोग की ओर बढ़ता है। मंदार पर्वत उसी समुद्र मंथन की अमर गाथा है, जो आज भी चुपचाप हमें यही सिखाता है कि बिना सहयोग के, बिना त्याग के, अमृत ढूँढने की हर कोशिश अधूरी रह जायेगी।

ग्रामीण बिहार के लिए नैतिक और व्यावहारिक महत्व:- ग्रामीण बिहार के लिए मंदार पर्वत केवल तीर्थ-स्थल नहीं, बल्कि स्थानीय पहचान और आत्म-सम्मान का भी प्रतीक है। यदि इसे सही ढंग से शिक्षा, पर्यटन और स्थानीय उद्यम से जोड़ा जाए, तो यह नौजवान और महिलाओं के लिए आजीविका के अवसर भी खोल सकता है।

इस दिशा में कुछ छोटी पहल हो सकती हैं:

- स्कूलों के सालाना **शैक्षणिक भ्रमण** की योजना
- स्थानीय बुज़ुर्गों और शिक्षकों से मौखिक इतिहास और लोककथाएँ दर्ज करने का डिजिटल रजिस्टर
- महिला-स्वयं-सहायता समूहों को स्थानीय भोजन, **हस्तशिल्प** और पर्यटक सहायता सेवाओं से जोड़ना

बदलाव:- मंदार पर्वत के सामने खड़ा सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि जब विरासत पर विकास के निशान बनते हैं, तो यह तय कौन करेगा कि क्या बदले और क्या बना रहे। स्थानीय गरीब, महिलाएँ, छोटे दुकानदार और छात्र भी इस निर्णय-प्रक्रिया का हिस्सा बनें, जिससे यह यकीन हो कि विकास उनकी आवाज़ से, न सिर्फ शहर या बोर्ड-रुम से चल रहा है।

मंदार पर्वत की ख़ामोशी में वही चेतावनी छिपी है, जो हमें बताती है कि मनुष्य चंद्रमा तक पहुँच गया, मगर अपने गाँव की आत्मा से दूर हो गया। यह लेख उसी ख़ामोश नफ़रत और उसी ख़ामोश सच्चाई को शब्द देने की कोशिश है, जिसे मंदार अपने चट्टानों के बीच सदियों से दबाकर रखे हुए है।

समीर आनंद (विद्यालय अध्यापक)
मध्य विद्यालय निमिया,अम्हारा,बेलहर (बाँका)

मंजूषा कला

मृदगौरव : अपनऽ धरती अपनऽ धरोहर

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि शिक्षार्थी के भीतर छिपी प्रतिभा को निखारकर उसे समाज के लिए आत्मनिर्भर बनाना है, और इस परिभाषा को धरातल पर सच कर दिखाया है; भागलपुर के **जगदीशपुर स्थित उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय, जिछो** में पिछले 12 वर्षों से कार्यरत कर्मठ शिक्षिका सुबाला कुमारी जी ने। उन्होंने नवाचारी शिक्षा के अंतर्गत वर्ग कक्ष की पढ़ाई को बेहद सरल, सुगम और मनोरंजक बनाने के लिए अंग प्रदेश की पारंपरिक कला 'मंजूषा कला' को अपना मुख्य माध्यम बनाया है।

क्या है मंजूषा कला?

चलिए पहले इसे जान लेते हैं:- ऐसी मान्यता है कि मंजूषा कला मात्र एक चित्रकारी नहीं, बल्कि अंग प्रदेश की लोक आस्था, अदम्य साहस और सती बिहुला के संघर्ष की एक जीवंत गाथा है, जिसे सावन-भादो मास में बिहुला-विषहरी पूजा के अवसर पर सर्पदंश से रक्षा और अखंड सौभाग्य की कामना के लिए विशेष रुप से बनाया जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, जब सती बिहुला अपने पति बाला लखेंद्र के प्राण वापस लाने के लिए नदी मार्ग से देवलोक जा रही थीं, तब उन्होंने बाँस के एक संदूक यानी 'मंजूषा' का निर्माण करवाया था, जिस पर शिल्पी लहसन माली ने प्राकृतिक रंगों से भगवान शिव, देवी मनसा और प्रकृति के सुंदर चित्रों को उकेरा था। भागलपुर में **माँ विषहरी** (मनसा देवी) का सबसे मुख्य और ऐतिहासिक मंदिर चंपानगर (नाथनगर) में स्थित है, जिसे माँ मनसा देवी मंदिर, चंपानगर के नाम से जाना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार चंपानगर ही वह ऐतिहासिक स्थान है, जहाँ बिहुला और बाला लखेंद्र का निवास था और इसी क्षेत्र से मंजूषा कला व **बिहुला** की गाथा की शुरुआत हुई थी। भागलपुर सहित आस-पास के कई इलाकों में माँ विषहरी की पूजा बड़े धूम-धाम से की जाती है।

जब कथा इतनी महान है तो कला भी अनोखी ही होगी। कला की सबसे अनोखी खासियत इसका कड़ा रंग-अनुशासन है, जिसमें बिना किसी अपवाद के केवल तीन रंगों–**गुलाबी (प्रेम व उल्लास)**, **हरा (प्रकृति व समृद्धि)** और **पीला (आस्था व मांगलिकता)** का ही प्रयोग किया जाता है। यह एक रेखा-प्रधान 'स्क्रॉल आर्ट' है जिसमें चित्रों के माध्यम से पूरी कहानी को क्रमिक रुप से दिखाया जाता है और इसके पात्रों की शारीरिक बनावट अंग्रेजी के 'X' अक्षर जैसी होती है, जिनकी आँखें बड़ी, चेहरे हमेशा एकतरफा (साइड प्रोफाइल) और बिना कान के बनाए जाते हैं। लहरिया, मोखा और सर्प जैसे विशिष्ट बॉर्डरों से सजी इस कला में नाग-नागिन, सूर्य, चंद्रमा, कमल और बिहुला की नाव जैसे प्रतीकों को प्रमुखता से उकेरा जाता है, जो इसे दुनिया की सबसे अनुशासित, अर्थपूर्ण और अनूठी लोक-कलाओं में से एक बनाता है।

इसी लोक लोक कला को **सुबाला जी** की अथक मेहनत और अनूठे मार्गदर्शन की बदौलत विद्यालय के बंद कमरे एक जीवंत कर्मशाला में बदल चुके हैं, जहाँ छात्राएं बड़े उत्साह के साथ पारंपरिक कोहबर चित्रकारी, कैनवास पेंटिंग, भूमि आकल्पन (स्थापत्य), साड़ियों के खूबसूरत बॉर्डर, टेबल क्लॉथ, वेणु शिल्प (बाँस की कलाकृतियां) और विभिन्न त्योहारों जैसे छठ पूजा व वट सावित्री पूजा का जीवंत चित्रण करना सीख रही हैं। उनके इस 12 वर्षों के लघुतम लेकिन महती प्रयास से बच्चों में न केवल अभूतपूर्व बहुमुखी विकास हुआ है, बल्कि यह कला अब इन बच्चियों और उनके माता-पिता के लिए घर बैठे अर्थोपार्जन का एक सुदृढ़ और प्रेरणादायी साधन बन चुकी है, जिसके सबसे सुंदर उदाहरण उनकी पूर्व छात्रा **साक्षी कुमारी** हैं, जो आज **भागलपुर रेलवे स्टेशन और रेलगाड़ियों में मंजूषा कला** बनाकर पूरे क्षेत्र का नाम उज्जवल कर रही हैं। वहीं वैष्णवी, सोनी और नीतू जैसी वर्तमान छात्राएं घर पर रहकर ही टाई और रुमाल जैसे छोटे-छोटे सामानों पर इस खूबसूरत चित्रकारी के जरिए धनोपार्जन कर अपने परिवार व समाज को गौरवान्वित कर रही हैं। सुबाला कुमारी जी का यह सफर यह साबित करता है कि यदि एक शिक्षक पूरे जज्बे के साथ सकारात्मक बदलाव का संकल्प ले, तो वह न सिर्फ लुप्त होती लोक-संस्कृति को नया जीवन दे सकता है बल्कि समाज की आर्थिक और सामाजिक तस्वीर को भी पूरी तरह बदल सकता है।

सुबाला कुमारी
उ० मा० वि० विशनपुर जीछो, गोराडीह (भागलपुर)

कर्म से कीर्तिमान

सेवा से सेवानिवृत्ति तक

शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और समाज परिवर्तन का सशक्त साधन भी है। इसी विश्वास को अपने कार्यों के केंद्र में रखकर तीन दशकों से अधिक समय तक शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित भाव से कार्य करने वाले एक प्रेरक शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक **आदित्य कुमार** की यह यात्रा अनेक शिक्षकों के लिए अनुकरणीय है।

30 सितंबर 1994 को **बिहार लोक सेवा आयोग** के माध्यम से नियुक्ति प्राप्त करने के बाद से ही उनकी रुचि केवल कक्षा शिक्षण तक सीमित नहीं रही। **खेलकूद**, **भाषण**, **निबंध**, **चित्रांकन**, **सांस्कृतिक** कार्यक्रमों तथा अन्य सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से बच्चों की प्रतिभा को मंच प्रदान करना उनकी कार्यशैली का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा।

वर्ष 1997 में **आदर्श मध्य विद्यालय कटोरिया** में योगदान के बाद विद्यालय में छात्र-छात्राओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई तथा विद्यालय ने प्रखंड, जिला और राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं में अपनी पहचान स्थापित की। बाद में आदर्श मध्य विद्यालय चांदन में भी उनके नेतृत्व में विद्यालय ने अनेक उपलब्धियाँ अर्जित की।

वर्ष 2018 में प्रधानाध्यापक के रुप में **कन्या मध्य विद्यालय, चांदन** की जिम्मेदारी मिलने के बाद विद्यालय के समग्र विकास का एक नया अध्याय प्रारंभ हुआ। शिक्षकों, अभिभावकों और समाज के सहयोग से विद्यालय में शैक्षणिक गुणवत्ता के साथ-साथ आधारभूत संरचनाओं के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। जहाँ कभी मूलभूत सुविधाओं का अभाव था, वहीं आज विद्यालय में बच्चों के लिए बेहतर संसाधन उपलब्ध हैं। विद्यालय परिसर को हरित एवं आकर्षक स्वरुप प्रदान किया गया तथा बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा को निखारने के लिए विभिन्न गतिविधियों को नियमित रुप से बढ़ावा दिया गया।

इन प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि विद्यालय के विद्यार्थियों ने बिहार दिवस सहित अनेक जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में भी विद्यालय ने पुरस्कार प्राप्त किए तथा राष्ट्रीय आय-सह-मेधा छात्रवृत्ति परीक्षा में विद्यार्थियों की निरंतर सफलता ने विद्यालय की पहचान को और मजबूत किया। आज विद्यालय की पहचान जिला स्तर से आगे बढ़कर राज्य स्तर तक स्थापित हो चुकी है।

शिक्षा के क्षेत्र में किए गए इन उल्लेखनीय योगदानों और विद्यालय विकास की इस प्रेरक यात्रा को वर्ष 2025 में "**राजकीय शिक्षक पुरस्कार**" के रुप में सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हुआ। यह सम्मान उनके समर्पण, नवाचारपूर्ण सोच और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

लगभग 32 वर्षों की गौरवपूर्ण सेवा के उपरांत **30 जून 2026** को वे **सेवानिवृत्त** हो रहे हैं। उनका संपूर्ण सेवाकाल इस बात का सशक्त उदाहरण है कि एक समर्पित शिक्षक केवल विद्यार्थियों का भविष्य ही नहीं, बल्कि पूरे विद्यालय और समाज की दिशा भी बदल सकता है। उनकी उपलब्धियाँ और कार्यशैली आने वाली पीढ़ियों के शिक्षकों के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बनी रहेंगी।

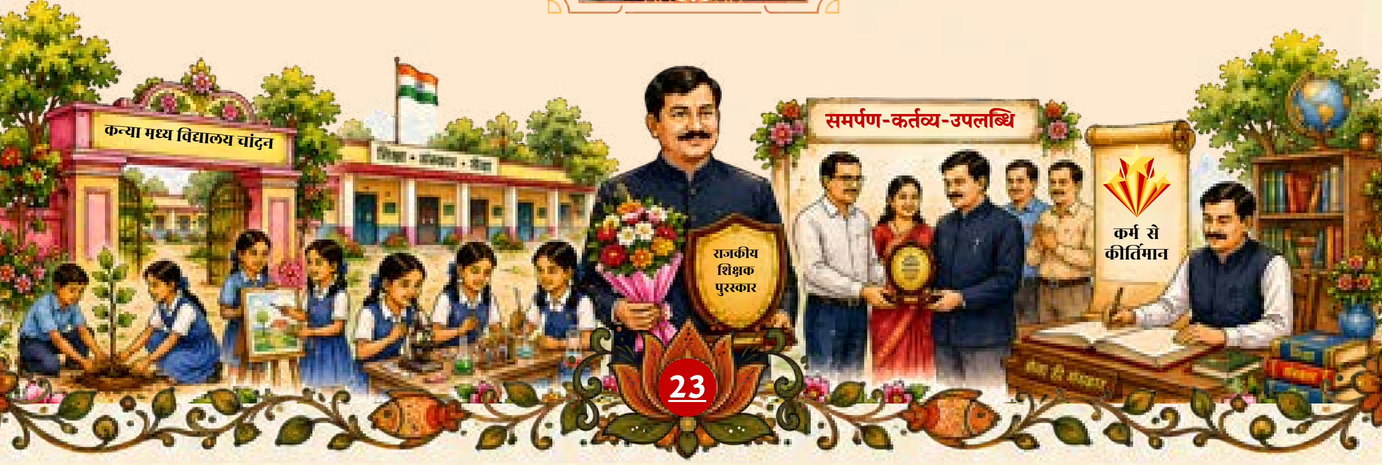

विद्यालय विकास की एक प्रेरक यात्रा

प्रेरक प्रधान

किसी विद्यालय की पहचान केवल उसके भवन से नहीं, बल्कि वहाँ विकसित होने वाली कार्य संस्कृति, अनुशासन और सीखने के वातावरण से बनती है। बाँका जिले के बौंसी प्रखंड स्थित **उत्क्रमित उच्च विद्यालय कैरी** के प्रधानाध्यापक **राजीव कुमार रंजन** की शैक्षणिक यात्रा इसी सोच और समर्पण का उदाहरण प्रस्तुत करती है। उनकी शिक्षण यात्रा फरवरी 2014 में उच्च विद्यालय जबड़ा, बौंसी में राजनीति विज्ञान शिक्षक के रुप में प्रारंभ हुई। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने विद्यालय में योगदान दिया। प्रारंभ में उन्हें कक्षा 11वीं और 12वीं को पढ़ाने की जिम्मेदारी मिली, लेकिन उनकी सरल, प्रभावी और विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण शैली के कारण शीघ्र ही वे कक्षा 9वीं से 11वीं तक की विभिन्न कक्षाओं में पढ़ाने लगे। विद्यार्थियों के साथ उनका जुड़ाव और शिक्षण के प्रति समर्पण उन्हें विद्यालय में एक लोकप्रिय शिक्षक के रुप में स्थापित करता गया।

लगभग सात वर्षों तक शिक्षक के रुप में सफलतापूर्वक कार्य करने के बाद वर्ष 2021 में उन्हें उच्च विद्यालय जबड़ा में प्रभारी प्रधानाध्यापक का दायित्व मिला। इस दौरान उन्होंने विद्यालय में सकारात्मक कार्य संस्कृति विकसित करने तथा शैक्षणिक वातावरण को बेहतर बनाने के लिए उल्लेखनीय प्रयास किए। वर्ष 2022 में **बिहार लोक सेवा आयोग** द्वारा आयोजित प्रधानाध्यापक परीक्षा में सफलता प्राप्त कर उन्होंने अपने शैक्षणिक जीवन की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की।

अप्रैल 2023 में उत्क्रमित उच्च विद्यालय कैरी, बौंसी में प्रधानाध्यापक के रुप में योगदान देने के साथ उनकी नई यात्रा प्रारंभ हुई। उस समय विद्यालय में आधारभूत सुविधाओं की अनेक चुनौतियाँ थीं। भवन तो था, लेकिन साफ-सफाई, रंग-रोगन, प्रकाश व्यवस्था तथा बैठने की समुचित व्यवस्था जैसी आवश्यकताओं पर विशेष कार्य किए जाने की जरुरत थी। विद्यालय परिवार और शिक्षकों के सहयोग से उन्होंने विद्यालय के समग्र विकास की दिशा में कार्य प्रारंभ किया। बच्चों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के लिए आर.ओ(RO) की व्यवस्था की गई। विद्यालय में अनुशासन और सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु 16 सीसीटीवी कैमरे लगाए गए। विभागीय सहयोग से 100 जोड़ी बेंच-डेस्क की व्यवस्था हुई, जिससे विद्यार्थियों की बैठने की समस्या का समाधान हुआ। साथ ही चेतना सत्र को नियमित, व्यवस्थित और समयबद्ध बनाया गया।

विद्यालय में शैक्षिक वातावरण को सुदृढ़ बनाने के लिए शिक्षकों ने सामूहिक रुप से कार्य किया, जिसका सकारात्मक परिणाम शैक्षणिक उपलब्धियों में भी दिखाई दिया। पिछले वर्ष विद्यालय ने इंटरमीडिएट परीक्षा में शत-प्रतिशत परिणाम प्राप्त कर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। विद्यालय परिसर को शिक्षण-अधिगम का जीवंत माध्यम बनाने के उद्देश्य से प्रमुख दीवारों पर शैक्षिक चित्रांकन कराया गया। क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक अहसन साहब की प्रेरणा से विद्यालय में शैक्षिक वातावरण को और समृद्ध बनाया गया। इसी क्रम में **चेतना सत्र मंच** का निर्माण भी किया गया, जहाँ विभिन्न शैक्षणिक, सांस्कृतिक और प्रेरक गतिविधियों का नियमित आयोजन होता है। आज उत्क्रमित उच्च विद्यालय कैरी जिले के अनुशासित, सक्रिय और प्रेरणादायक विद्यालयों में अपनी पहचान बना चुका है। विद्यालय की उपलब्धियाँ केवल संसाधनों की नहीं, बल्कि टीमवर्क, नेतृत्व और सतत प्रयासों की कहानी कहती हैं।

प्रधानाध्यापक का मानना है कि शिक्षक का वास्तविक दायित्व केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को नैतिक, शैक्षिक और जीवनोपयोगी मूल्यों से समृद्ध करना है। उनकी यह यात्रा इस बात का प्रमाण है कि दूरदृष्टि, समर्पण और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से किसी भी विद्यालय को परिवर्तन और उत्कृष्टता के मार्ग पर अग्रसर किया जा सकता है।

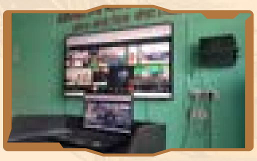

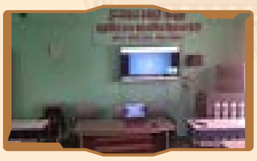

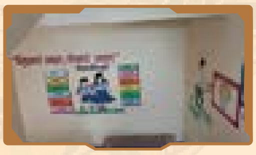
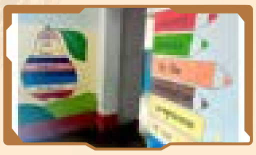
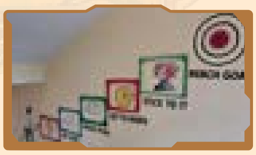

राजीव रंजन कुमार
उत्क्रमित उच्च विद्यालय कैरी, बौंसी (बाँका)

परिवर्तन की नई शुरुआत

प्रेरक प्रधान

उर्दू प्राथमिक विद्यालय बिदायडीह एक सामान्य विद्यालय था। विद्यालय में कई प्रकार की चुनौतियाँ थीं- बच्चों की उपस्थिति कम रहती थीं। विद्यालय व्यवस्था को और बेहतर बनाने की आवश्यकता थी तथा अभिभावकों का जुड़ाव भी सीमित था।

इसी बीच विद्यालय में नई प्रधान शिक्षिका **खुशबू कुमारी** ने कार्यभार संभाला। उन्होंने यह संकल्प लिया कि विद्यालय को केवल पढ़ाई का केन्द्र नहीं, बल्कि बच्चों के सपनों और संस्कारों का सुंदर आंगन बनाना है।

प्रधान शिक्षिका खुशबू कुमारी ने सबसे पहले विद्यालय में सकारात्मक और अपनत्व भरा वातावरण बनाने पर ध्यान दिया। वे प्रतिदिन विद्यालय में बच्चों का मुस्कान के साथ स्वागत करतीं और शिक्षकों के साथ मिलकर विद्यालय में बेहतर योजना बनाकर कार्य करतीं। धीरे-धीरे विद्यालय में परिवर्तन दिखाई देने लगा। बच्चों की नियमित उपस्थिति बढ़ने लगी। शत-प्रतिशत बच्चे विद्यालय गणवेश एवं जूते में आने लगे। विद्यालय परिसर स्वच्छ एवं व्यवस्थित होने लगा। प्रार्थना सभा को प्रभावी बनाया गया। बच्चों को गतिविधि आधारित शिक्षा से जोड़ा गया। कमजोर बच्चों के लिए अतिरिक्त सहयोग प्रारम्भ किया गया।

प्रधान शिक्षिका का विश्वास था-**"हर बच्चा एक नई रोशनी है, आवश्यकता केवल उसे सही दिशा देने की है।"** उनकी मेहनत, संवेदनशीलता और सकारात्मक सोच से विद्यालय का वातावरण बदलने लगा। शिक्षक अधिक उत्साह के साथ कार्य करने लगे, अभिभावकों का विश्वास बढ़ा और बच्चों में आत्मविश्वास विकसित हुआ। कुछ समय बाद विद्यालय की पहचान एक अनुशासित, स्वच्छ एवं प्रेरक विद्यालय के रुप में होने लगी। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने विद्यालय के प्रगति की सराहना की।

आज विद्यालय के बच्चे गर्व से कहते हैं- **"हमारी प्रधान शिक्षिका हमें सिर्फ पढ़ाती नहीं, बल्कि जीवन में आगे बढ़ना भी सिखाती हैं।"**

अत: यह कहा जा सकता है कि एक समर्पित विद्यालय प्रधान अपने स्नेह, अनुशासन और नेतृत्व से विद्यालय में नई ऊर्जा, नई सोच और नई पहचान ला सकती है।

खुशबू कुमारी (प्रधान शिक्षिका)
उर्दू प्राथमिक विद्यालय बिदायडीह, बाँका

बंद कमरों से खुली धूप तक

आदर्श विद्यालय की ओर बढ़ते कदम

भागलपुर के नाथनगर प्रखंड स्थित **मध्य विद्यालय दोगच्छी** की दीवारें अब केवल ईंट और रंगों का मेल नहीं रह गई हैं, बल्कि वे बच्चों के सपने, शिक्षकों की मेहनत, सृजनात्मकता और सीखने की खुशी से जीवंत हुई एक प्रेरक दुनिया बन चुकी हैं। विद्यालय की दीवारों पर उकेरे गए चित्र, सूक्तियाँ, प्रेरक पंक्तियाँ और शिक्षण-अधिगम सामग्री बच्चों को प्रतिदिन कुछ नया सोचने, समझने और सीखने के लिए प्रेरित करती हैं। ये दीवारें सचमुच **"मौन शिक्षक"** का रुप ले चुकी हैं, जो बिना बोले बच्चों को मानवता, सामाजिकता, अनुशासन और देशप्रेम का पाठ पढ़ाती हैं।

विद्यालय का प्रत्येक कोना शिक्षा को रोचक, सरल और जीवंत बनाने का संदेश देता है। रंग-बिरंगे चित्र बच्चों की कल्पनाओं को नई उड़ान देते हैं और ऐसा वातावरण तैयार करते हैं, जहाँ बच्चे केवल पुस्तकों से ही नहीं, बल्कि अपने आसपास के माहौल से भी सीखते हैं। शिक्षकों के लिए भी यह दृश्य सिखाने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, सहज और आनंददायक बना रहा है। विद्यालय का

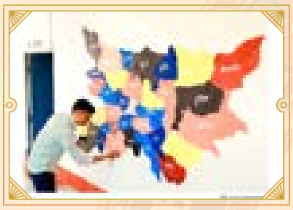

वातावरण ऐसा बनाया गया है कि बच्चे विद्यालय आने के लिए उत्साहित रहें। प्रार्थना स्थल से लेकर कक्षा कक्षों तक हर स्थान को शैक्षणिक दृष्टि से उपयोगी बनाया गया है। दीवारों पर बने चित्र सिर्फ बच्चों को खेल खेल में सिखने का अवसर ही प्रदान नहीं करती बल्कि उनकी स्मरण शक्ति,रचनात्मक सोंच,और विषय के प्रति समझ में भी सकारात्मक वृद्धि करती है। विद्यालय के शिक्षक **श्री ओम प्रकाश** ने जब फेसबुक के विभिन्न समूह में विद्यालय की तस्वीरें साझा कीं, तब यह अभिनव प्रयास धीरे-धीरे लोगों का ध्यान आकर्षित करने लगा। यह पहल तब और विशेष बन गई, जब बिहार के **अपर मुख्य सचिव** डॉ. एस. सिद्धार्थ की नजर इन तस्वीरों पर पड़ी। वे विद्यालय की इस रचनात्मकता से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री अरुण कुमार को विशेष प्रशंसा-पत्र भेजा। अपने संदेश में उन्होंने लिखा कि यह प्रयास केवल सजावट नहीं, बल्कि शिक्षा को सुंदर, प्रभावी और प्रेरणादायक बनाने की सोच का प्रतीक है। उन्होंने यह भी इच्छा व्यक्त की कि राज्य के अन्य विद्यालय भी इसी प्रकार स्वच्छ, सुसज्जित और प्रेरक वातावरण वाले बनें। विद्यालय की इस सकारात्मक पहल से प्रभावित होकर भागलपुर प्रमंडल के क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशक अहसन सर भी विद्यालय पहुँचे। उन्होंने विद्यालय का अवलोकन किया, बच्चों से बातचीत की तथा शिक्षकों को कई उपयोगी सुझाव दिए।

आज **मध्य विद्यालय दोगच्छी** एक प्रेरणा के रुप में सामने आया है। यह विद्यालय यह संदेश देता है कि यदि शिक्षक संकल्प और समर्पण के साथ कार्य करें, तो सीमित संसाधनों में भी विद्यालय को बच्चों के सपनों की सबसे सुंदर पाठशाला बनाया जा सकता है।

ओम प्रकाश
मध्य विद्यालय दोगच्छी, नाथनगर (भागलपुर)

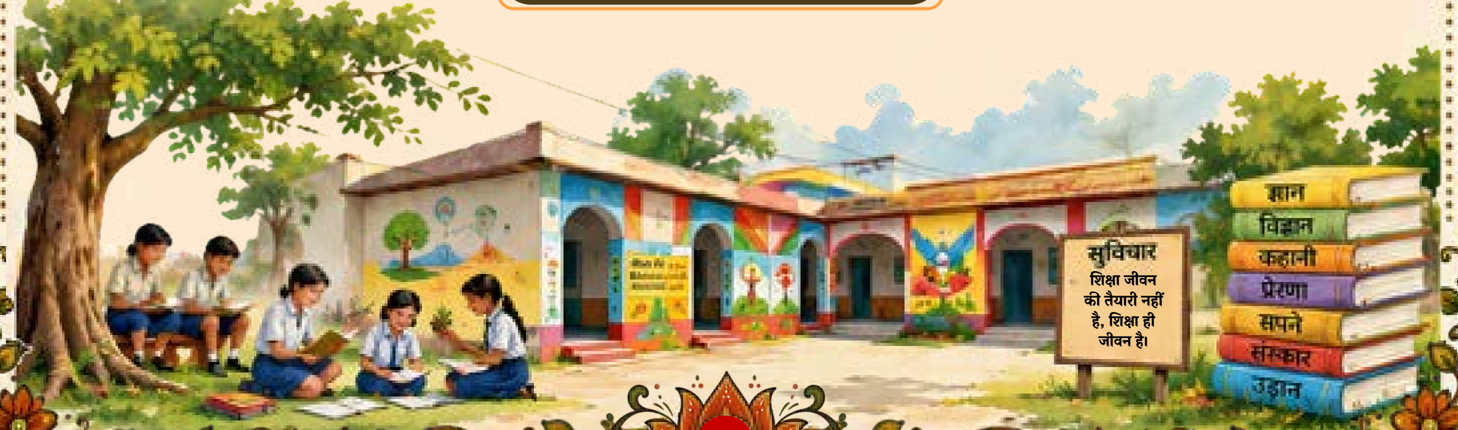

संघर्ष, संकल्प और सफलता

आदर्श विद्यालय की ओर बढ़ते कदम

"सफलता का मार्ग कभी सरल नहीं होता, लेकिन दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयास उसे अवश्य प्रशस्त कर देते हैं।" लगभग दो दशकों तक भागलपुर जिले के कहलगाँव प्रखंड में नियोजित शिक्षक के रुप में कार्यरत रहीं **अनामिका नन्दिनी** के जीवन की सबसे बड़ी इच्छा थी कि वे अपने गृह जिले में रहकर शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दें। प्रतिदिन लगभग साठ किलोमीटर की दूरी तय कर विद्यालय पहुँचना उनकी दिनचर्या का हिस्सा था, लेकिन उन्होंने कभी अपने लक्ष्य से समझौता नहीं किया।

बिहार लोक सेवा आयोग की **TRE-1** परीक्षा में सफलता के बाद उन्हें बांका जिला आवंटित हुआ। इसके पश्चात प्रधान शिक्षक परीक्षा में सफल होकर 21 जुलाई 2025 को उन्होंने कन्या प्राथमिक विद्यालय, एकसिंधा में प्रधान शिक्षक के रुप में योगदान दिया। विद्यालय उनके घर से मात्र पाँच किलोमीटर की दूरी पर था और अब उनके पास अपने सपनों को साकार करने का अवसर था।

योगदान के समय विद्यालय में 108 बच्चों का नामांकन था, लेकिन नियमित उपस्थिति केवल 50-60 बच्चों तक सीमित थी। परिसर में हरियाली का अभाव था तथा कई आधारभूत सुविधाओं की कमी थी। उन्होंने सबसे पहले अभिभावकों, वार्ड सदस्यों और ग्रामीणों से संवाद स्थापित कर विद्यालय को समुदाय से जोड़ने का प्रयास किया। धीरे-धीरे अभिभावकों की सहभागिता बढ़ी और बच्चों की उपस्थिति में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला।

विद्यालय के सौंदर्यीकरण हेतु वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। अनेक कठिनाइयों के बावजूद आज विद्यालय की पोषण वाटिका में टमाटर, बैंगन, मिर्च, स्ट्रॉबेरी और पालक जैसे पौधे लहलहा रहे हैं। वर्षों पुरानी पेयजल समस्या के समाधान हेतु किए गए प्रयासों से विद्यालय में नया चापाकल भी स्थापित हुआ। बच्चों की नियमित उपस्थिति बढ़ाने के लिए प्रत्येक माह चेतना सत्र में उत्कृष्ट उपस्थिति वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाने लगा। इस पहल ने बच्चों में विद्यालय के प्रति आकर्षण और सीखने के प्रति उत्साह बढ़ाया।

आज विद्यालय में 109 बच्चों का नामांकन है और **प्रतिदिन 90 से 100 बच्चों** की उपस्थिति दर्ज होती है। विद्यालय स्वच्छ, सुंदर और आकर्षक वातावरण का उदाहरण बन चुका है।

अनामिका नन्दिनी की यात्रा यह सिद्ध करती है कि यदि नेतृत्व संवेदनशील हो, लक्ष्य स्पष्ट हो और प्रयास निरंतर हों, तो सीमित संसाधनों के बीच भी सकारात्मक परिवर्तन संभव है। बच्चों का विश्वास, अभिभावकों का सहयोग और समुदाय का स्नेह ही उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

"संकल्प, धैर्य और निरंतर प्रयास से असंभव प्रतीत होने वाले लक्ष्य भी प्राप्त किए जा सकते हैं।"

अनामिका नन्दिनी(प्रधान शिक्षक)
कन्या प्राथमिक विद्यालय, एकसिंघा, (बाँका)

नया सवेरा

ISM लैब/ डिजिटल लर्निंग

मध्य विद्यालय सैनो की शिक्षिका **शिल्पी कुमारी** ने आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की एक नई मिसाल स्थापित करने का एक बेहतरीन प्रयास किया है। उन्होंने अपने विद्यालय के बच्चों को पारम्परिक किताबी ज्ञान से आगे ले जाकर डिजिटल दुनिया और आधुनिक तकनीकों से जोड़ने का एक बेहद सराहनीय कदम उठाया है।

डिजिटल शिक्षा और ISM लैब का बेहतरीन उपयोग:-

शिक्षिका ने विद्यालय में उपलब्ध डिजिटल माध्यमों जैसे **स्मार्ट क्लास** और **ISM लैब** (Integrated Science and Math Lab) का उपयोग शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए बखूबी किया है। उन्होंने बच्चों के सीखने के तरीके को बदलने का एक सराहनीय और सकारात्मक प्रयास किया है।

स्मार्ट क्लास और प्रैक्टिकल लर्निंग:-

विद्यालय के बच्चे आज सिर्फ किताबों के माध्यम से थ्योरी ही नहीं पढ़ते बल्कि, प्रोजेक्टर और स्मार्ट स्क्रीन के माध्यम से विजुअल लर्निंग भी सीख रहे हैं। दैनिक समय-सारणी में डिजिटल कक्षाएँ का समय निश्चित है। चाहे वो सांकेतिक भाषा सिखाना हो या विज्ञान के कठिन सिद्धांत; विज्ञान आधारित डॉक्यूमेंट्री हो या रॉकेट लॉन्चिंग, वैज्ञानिकों के साक्षात्कार हो या नवीन प्रयोग की जानकारी, बच्चे उन्हें देखकर और महसूस करके सीख रहे हैं।

ऑनलाइन और इंटरैक्टिव कक्षाएं:-

कोरोना काल के बाद से डिजिटल माध्यमों का महत्व काफी बढ़ा है, और शिक्षिका शिल्पी ने इसे बखूबी अपनाया है। वे बड़ी स्क्रीन्स के जरिए बच्चों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और ऑनलाइन सत्रों से भी जोड़ रही हैं जिससे ग्रामीण परिवेश के बच्चों को भी वैश्विक स्तर का एक्सपोजर मिल रहा है। विकसित भारत "**बिल्डथॉन**" एक ऐसा ही मंच था, जहाँ केंद्रीय शिक्षा निदेशालय के साथ शिक्षिका के मार्गदर्शन में विद्यालय के बच्चों को अपने नवाचार "**समृद्ध भारत: आओ बदलें तस्वीर देश की**" साझा करने का अवसर प्राप्त हुआ।

जिज्ञासा और उत्सुकता को बढ़ावा:-

शिल्पी कुमारी मानती हैं कि हमारी शिक्षण शैली तभी प्रभावी और रोचक हो सकती है जब बच्चे तल्लीनता के साथ बैठकर पूरी एकाग्रता से सीख रहे हों। ऐसा डिजिटल शिक्षा के माध्यम से संभव है। यह उन्हें पूरी तरह से अपडेट बनाता है और बच्चे नवीन तकनीक को सीखने की ओर अग्रसर होते हैं।

एक अनुकरणीय योगदान:-

शिक्षिका का यह योगदान केवल सिलेबस पूरा करने तक सीमित नहीं है बल्कि यह बच्चों के सुनहरे भविष्य की नींव रख रहा है। ग्रामीण या अर्ध-शहरी क्षेत्रों में जहाँ डिजिटल संसाधनों तक बच्चों की पहुँच सीमित होती है, वहाँ इस शिक्षिका का लगन के साथ बच्चों को तकनीक से जोड़ना समाज के लिए प्रेरणादायक है।

शिक्षिका का यह प्रयास यह साबित करता है कि अगर इच्छाशक्ति दृढ़ हो, तो सरकारी स्कूलों के बच्चों को भी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा और संसाधन उपलब्ध कराए जा सकते हैं। मध्य विद्यालय सैनो के बच्चों के जीवन में शिक्षा का यह नया सवेरा लाने के लिए शिक्षिका शिल्पी कुमारी का योगदान काफी महत्वपूर्ण है।

शिल्पी कुमारी
मध्य विद्यालय सैनो, जगदीशपुर (भागलपुर)

कचरा प्रबंधन से स्वच्छ भविष्य की ओर

हरियाली के प्रहरी

पर्यावरण संरक्षण केवल एक विषय नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी है। इसी सोच को साकार करते हुए **उत्क्रमित उच्च विद्यालय कोरिया, चांदन** में ईको क्लब मिशन के अंतर्गत मई माह के निर्धारित विषय "**कचरा प्रबंधन**" पर एक विशेष जन-जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस गतिविधि का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण एवं जिम्मेदार नागरिकता के प्रति जागरुक बनाना था।

कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के **फोकल शिक्षक मुकेश कुमार** ने विद्यार्थियों को कचरा प्रबंधन के महत्व से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि कचरे का उचित निस्तारण केवल घर और विद्यालय की सफाई तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पृथ्वी के संरक्षण का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। बच्चों को गीले एवं सूखे कचरे के पृथक्करण, एकल-उपयोग प्लास्टिक से होने वाले दुष्प्रभाव तथा **"3R सिद्धांत" — Reduce, Reuse and Recycle** के बारे में सरल एवं रोचक ढंग से जानकारी दी गई।

इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक चिरंजीव कुमार, सुमन कुमारी, भानुमति कुमारी, प्रतिभा राज एवं राकेश कुमार सहित अन्य शिक्षकों ने भी सक्रिय सहभागिता निभाई। सभी शिक्षकों ने मिलकर विद्यार्थियों को स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई तथा कचरे से फैलने वाली बीमारियों और पर्यावरणीय चुनौतियों के प्रति जागरुक किया।

कार्यक्रम की विशेषता विद्यार्थियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही। बच्चों ने जाना कि जैविक कचरे से खाद तैयार कर उसे उपयोगी संसाधन में बदला जा सकता है तथा प्लास्टिक जैसे हानिकारक कचरे को पर्यावरण में फैलने से रोकने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर भी महत्वपूर्ण प्रयास किए जा सकते हैं। इस गतिविधि ने विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने के साथ-साथ उन्हें समाज में जागरुकता फैलाने के लिए भी प्रेरित किया।

विद्यालय का मानना है कि जब बच्चे पर्यावरण संरक्षण के संदेशवाहक बनते हैं, तब समाज में सकारात्मक परिवर्तन की नींव मजबूत होती है। ईको क्लब की यह पहल इसी दिशा में एक सराहनीय कदम है, जो विद्यार्थियों को स्वच्छ एवं हरित भविष्य के निर्माण के लिए प्रेरित कर रही है।

"**स्वच्छ धरा, स्वस्थ जीवन**" केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक सामूहिक संकल्प है। आइए, हम सभी कचरा प्रबंधन को अपनी आदत बनाकर पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

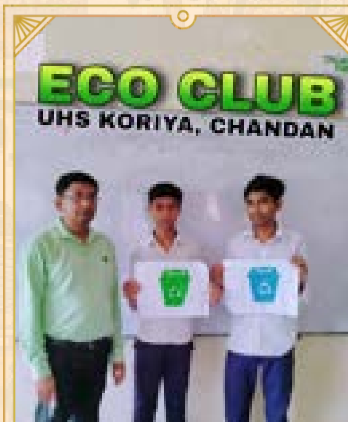

मुकेश कुमार
उत्क्रमित उच्च विद्यालय कोरिया, चांदन (बाँका)

प्रकृति के लिए प्रयास

प्रकृति के प्रहरी

मध्य विद्यालय तरडीहा, जगदीशपुर के प्रधानाध्यापक **श्री मुकेश कुमार भारती** ने अपने विद्यालय के प्रांगण को हरित ऊर्जा से पूर्ण बनाने के लिए तथा बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता भरने के उद्देश्य से "**इको क्लब**" का निर्माण किया। अपने अनुकरणीय लेख में वे कई मुख्य मुद्दों को लेकर आए हैं, जिनसे हम शिक्षक साथी तथा विद्यार्थीगण काफी कुछ सीख सकते हैं। आइए साथ मिल कर पढ़ते हैं और अनुसरण करते हैं-

पर्यावरण में अपघटन न हो:- प्लास्टिक एक गैर-बायोडिग्रेडेबल सामग्री है, जो मिट्टी में सैकड़ों वर्षों तक कचरे के रुप में मौजूद रहता है। मिट्टी की उर्वरता कम करके प्लास्टिक कचरा मिट्टी की गुणवत्ता को नष्ट कर देता है जिससे उसकी जल सोखने की क्षमता घट जाती है और वह बंजर होने लगती है।

जल प्रदूषण और जलजीवों को खतरा:- नालियों, नदियों और समुद्रों में पहुँचा प्लास्टिक जलीय जीवन (मछलियों और कछुओं आदि) के लिए जानलेवा है। कई समुद्री जीव इसे खा कर दम तोड़ देते हैं।

जानवरों की मौत:- आवारा पशु (जैसे गाय) खाने की तलाश में प्लास्टिक की थैलियां निगल जाते हैं जिससे उनकी आंतें ब्लॉक हो जाती हैं और अंततः उनकी मौत हो जाती है।

वायु प्रदूषण:- प्लास्टिक को जलाने पर डायऑक्सिन जैसी अत्यधिक विषैली गैसें निकलती हैं, जो वायु प्रदूषण फैलाती हैं और सांस संबंधी बीमारियां पैदा करती हैं।

मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक:- प्लास्टिक के बर्तन और थैलियों में रखा गर्म खाना या पानी जहरीले रसायनों (जैसे BPA और Phthalates) को सोख लेता है जो कैंसर और हार्मोनल असंतुलन का कारण बन सकते हैं।

माइक्रो प्लास्टिक का संकट:- छोटे-छोटे प्लास्टिक के कण हवा , पानी और भोजन के माध्यम से मानव शरीर में प्रवेश कर रहे हैं, जो सीधे हमारे आंतरिक अंगों को नुकसान पहुंचाते हैं।

जलभराव और बाढ़ का कारण:- प्लास्टिक की थैलियों और बोतलों के कारण अक्सर शहरों की सीवर और जलनिकासी व्यवस्था (नालियां) अवरुद्ध हो जाती हैं, जिससे बारिश में जलभराव या बाढ़ जैसी समस्या होती है।

प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव:- प्लास्टिक का उत्पादन मुख्य रुप से पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे अनवीकरणीय जीवाश्म ईंधन से होता है, जिससे प्राकृतिक संसाधन तेजी से घट रहे हैं।

पुनर्चक्रण में कठिनाई:- अधिकांश प्लास्टिक कचरे का पुनर्चक्रण नहीं हो पाता है, क्योंकि प्लास्टिक कई अलग-अलग किस्मों का होता है और इसे अलग करना काफी महंगा और जटिल प्रक्रिया है।

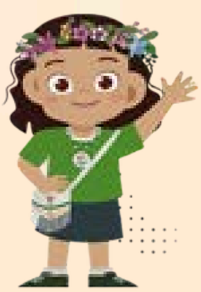

ECO FRIENDLY

श्री मुकेश कुमार भारती (प्रधानाध्यापक)
मध्य विद्यालय तरडीहा, जगदीशपुर(भागलपुर)

हों तैयार हम

सुरक्षित शनिवार विशेष

मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत "**सुरक्षित शनिवार** " बच्चों को विभिन्न आपदाओं से बचाने के लिए एक ऐसा कार्यक्रम है, जहाँ बच्चे यह सीखते हैं कि वह स्वयं की सुरक्षा कैसे करेंगे। बच्चे "**घर से विद्यालय एवं विद्यालय से वापस घर तक**" सुरक्षित कैसे रहें साथ ही, विद्यालय में सीखे इस कौशल को अपने घर-परिवार एवं समुदाय के साथ भी साझा करें ताकि एक सुरक्षित समाज बन सके। इस कार्यक्रम में बच्चों को प्राकृतिक, मानव जनित, स्वास्थ्य संबंधी और सामाजिक सभी प्रकार की आपदाओं से बचने के लिए सिखाया जाता है, जैसे- भूकंप, बाढ़, सुखाड़, शीतलहर, वज्रपात, अगलगी, आंधी-तूफान, लू, डायरिया, निमोनिया, कोविड -19, विषैले जीव-जन्तुओं से बचाव, बाल अधिकार, छेड़छाड़, बाल विवाह, बाल शोषण आदि।

इस कार्यक्रम में बच्चों को विद्यालय में यह सिखाया जाता है कि आपदा के पहले, आपदा के समय और आपदा के बाद उन्हें क्या करना चाहिए। उन्हें आपदा से बचने के लिए मॉक ड्रिल भी करना सिखाया जाता है ताकि उनके व्यवहार में परिवर्तन हो और वे आपदा के समय घबराएं नहीं, स्वयं को सुरक्षित रखें और अपने आसपास के लोगों को भी जागरुक करें। अपने छोटे भाई-बहनों को भी सुरक्षित करें।

हर शनिवार को फोकल शिक्षक बाल प्रेरक के सहयोग से विद्यालय में कई तरह की गतिविधियों यथा नाटक, कहानी, गीत-संगीत, चित्र आदि के माध्यम से सुरक्षित शनिवार कार्यक्रम में विभिन्न आपदाओं से बचने के उपाय सीखाते हैं। इस कार्यक्रम में बच्चों को प्राथमिक उपचार, स्ट्रेचर बनाना आदि भी सिखाया जाता है।

हर महीने के चारों शनिवार को अलग-अलग आपदाओं और उनसे बचाव के उपायों के बारे में बताया जाता है तथा अगर किसी महीने में यदि पाँचवाँ शनिवार पड़ा हो तो उस शनिवार को व्यक्तिगत स्वच्छता, अपने विद्यालय एवं आस-पास के परिसर की सफाई, हाथ धुलाई आदि के बारे में बताया जाता है।

कहते हैं कि
आपदा नहीं हो भारी,
यदि पूरी हो तैयारी।

यह कार्यक्रम **2015 से 2030 ई0** तक के लिए तैयार किया गया है ताकि हमारी एक ऐसी पीढ़ी तैयार हो सके, जो आपदाओं से बचने में सक्षम हो और वह अपने आने वाली पीढ़ी को भी ऐसा ही बना सके। इस कार्यक्रम का असर धीरे-धीरे बच्चों पर पड़ना शुरु भी हुआ है। हमें पूरी उम्मीद है कि इस कार्यक्रम का जो लक्ष्य है, हम उसे जरुर पूरा करेंगे।

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात ते, सिल पर पड़त निशान।।
मेरा प्रयास फोकल शिक्षक के रुप में अनवरत जारी है।
सफलता मिलेगी उम्मीद के साथ।

ज्योति कुमारी
मध्य विद्यालय भनरा, चांदन (बाँका)

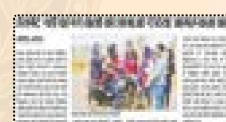
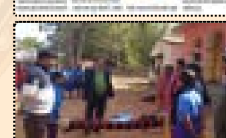

योग करे नीरोग

स्वास्थ्य विशेष

क्या हम बच्चों को सिर्फ परीक्षाओं के लिए तैयार कर रहे हैं, या जिंदगी के संघर्षों के लिए भी? जब भारी बस्ते और तनाव मासूम चेहरे से उनकी मुस्कान छीन लेते हैं, तब योग ही उनके मन को संबल देता है।

यही कारण है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली केवल सूचनाओं को एकत्रित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका वास्तविक उद्देश्य विद्यार्थियों का **शारीरिक**, **मानसिक** और **आध्यात्मिक विकास** करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति में 'योग' एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। वर्तमान समय में, जहाँ छात्र मानसिक तनाव, एकाग्रता की कमी और प्रतिस्पर्धा के दबाव से जूझ रहे हैं, वहाँ योग शिक्षा के क्षेत्र में एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

शिक्षा में योग का सबसे प्राथमिक महत्व विद्यार्थियों के स्वास्थ्य से जुड़ा है। नियमित योगाभ्यास से छात्रों का शरीर लचीला और रोगमुक्त रहता है। इसके साथ ही '**प्राणायाम**' और '**ध्यान**' के माध्यम से उनके मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। यह छात्रों के भीतर की घबराहट और परीक्षा के तनाव को कम कर उन्हें शांत चित्त प्रदान करता है।

एक सफल विद्यार्थी के लिए एकाग्रता सबसे महत्वपूर्ण गुण है। योग के विभिन्न आसन और ध्यान की तकनीकें मस्तिष्क के न्यूरॉन्स को सक्रिय करती हैं, जिससे स्मरण शक्ति और सीखने की क्षमता बढ़ती है। जब एक छात्र का मन स्थिर होता है, तो वह जटिल से जटिल विषयों को भी सुगमता से समझ सकता है।

योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक पद्धति है। महर्षि पतंजलि द्वारा बताए गए शिक्षा के आधार में महर्षि पतंजलि द्वारा रचित 195 सूत्र को रखा जाए जो अनुपम, अद्वितीय और अविस्मरणीय है जिसे हर मानव को जरुर जानना चाहिए ताकि वह अपने जीवन को सरल और सहज बनाते हुए अपने श्रेष्ठतम को पा सके। डाइट बाँका जैसे संस्थानों के माध्यम से जब भावी शिक्षकों को योग का प्रशिक्षण दिया जाता है, तो वे न केवल स्वयं अनुशासित होते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ी में भी इन संस्कारों को रोपित करने में सक्षम बनते हैं।

किशोरावस्था और छात्र जीवन में भावनाओं का उतार-चढ़ाव सामान्य है। योग विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना सिखाता है। इससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है और वे विषम परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोते। यह सकारात्मक दृष्टिकोण उनके शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ-साथ उनके सामाजिक व्यवहार में भी निखार लाता है।

शिक्षा का लक्ष्य केवल साक्षर बनाना नहीं, बल्कि एक बेहतर इंसान गढ़ना है।

चंदन कुमार मिश्रा (डाइट, बाँका) के अनुसार, यदि योग को प्राथमिक स्तर से ही शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बना दिया जाए, तो हम एक स्वस्थ, एकाग्र और प्रबुद्ध राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। योग वह प्रकाश है जो विद्यार्थियों के अंतर्मन को आलोकित कर उसे सफलता के शिखर तक ले जाने का मार्ग प्रशस्त करता है। चंदन कुमार मिश्रा जी के अनुसार योग से बच्चों में तनाव मुक्त शिक्षण, एकाग्रता और स्मृति में सुधार, नैतिक और चारित्रिक विकास और सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण होता है।

अंततः, योग सिर्फ स्कूल की घंटी बजने पर किया जाने वाला अभ्यास नहीं है, बल्कि बच्चों के मुरझाते चेहरों पर मुस्कान और उनके बिखरते हौसलों को समेटने की एक संजीवनी है। आइए, शिक्षा के साथ योग के इस दीये को हर बच्चे के भीतर जलाएं ताकि आने वाला कल न सिर्फ साक्षर हो, बल्कि मानसिक रुप से समृद्ध और शांत भी हो।

चंदन कुमार मिश्रा
DIET, बाँका

टेक्नो मंच

चित्र (Image) को PDF में कैसे बदलें?

1 विधि 1: कंप्यूटर (कोई सॉफ्टवेयर नहीं)

Print to PDF का उपयोग

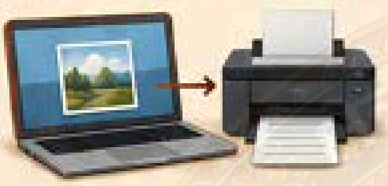

1. उस फ़ोल्डर को खोलें जिसमें आपकी इमेज है।
2. एक या एक से अधिक इमेज चुनें।
3. Right-click करें और Print चुनें।
4. पेपर साइज (A4, Letter आदि) चुनें।
5. इमेज लेआउट चुनें।
6. प्रिंटर ड्रॉपडाउन में Microsoft Print to PDF चुनें।
7. Print पर क्लिक करें।
8. PDF सेव करने की जगह चुनें।
9. फ़ाइल का नाम लिखें।
10. Save पर क्लिक करें।

परिणाम: आपकी इमेज PDF में बदल जाएगी।

2 विधि 2: कंप्यूटर

Microsoft Word का उपयोग

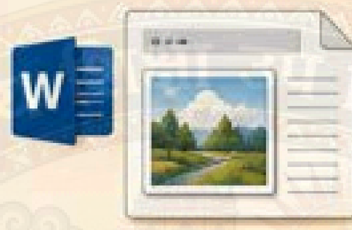

1. Microsoft Word खोलें।
2. एक खाली दस्तावेज़ बनाएं।
3. Insert → Pictures → This Device चुनें।
4. अपनी इमेज चुनें।
5. आवश्यकता अनुसार आकार बदलें।
6. File → Save As पर क्लिक करें।
7. जगह (Location) चुनें।
8. "PDF (*.pdf)" चुनें (Save as type में)।
9. Save पर क्लिक करें।

परिणाम: आपकी इमेज PDF में बदल जाएगी।

3 विधि 3: Android Phone

Google Photos का उपयोग

1. इमेज खोलें।
2. Share (शेयर) पर टैप करें।
3. Print चुनें।
4. प्रिंटर मेनू में "Save as PDF" चुनें।
5. PDF आइकन पर टैप करें।
6. फ़ोल्डर चुनें।
7. Save पर टैप करें।

परिणाम: आपकी इमेज PDF में बदल जाएगी।

4 विधि 4: iPhone (iOS)

1. Photos ऐप खोलें।
2. एक या अधिक इमेज चुनें।
3. Share पर टैप करें।
4. Print चुनें।
5. प्रिव्यू में इमेज पर दो उंगलियों से फैलाकर (Zoom In) करें।
6. PDF प्रिव्यू खुलेगा।
7. Share फिर से टैप करें।
8. Save to Files चुनें।
9. स्थान चुनें और सेव करें।

परिणाम: आपकी इमेज PDF में बदल जाएगी।

5 विधि 5: ऑनलाइन कन्वर्टर

1. वेबसाइट खोलें (iLovePDF / Smallpdf आदि)।
2. "Select Images" पर क्लिक करें।
3. अपनी JPG/PNG फ़ाइलें अपलोड करें।
4. आवश्यकतानुसार क्रम (Order) सेट करें।
5. "Convert/Create PDF" पर क्लिक करें।
6. PDF डाउनलोड करें।

परिणाम: आपकी इमेज PDF में बदल जाएगी।

6 विधि 6: Adobe Acrobat का उपयोग

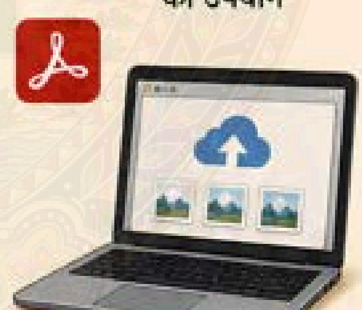

1. Adobe Acrobat Online JPG to PDF Tool खोलें।
2. इमेज फ़ाइलें अपलोड करें।
3. कन्वर्ट होने की प्रतीक्षा करें।
4. PDF डाउनलोड करें।

परिणाम: आपकी इमेज PDF में बदल जाएगी।

यदि आपके पास कई इमेज हैं और उन्हें एक ही PDF में चाहिए

सभी इमेज चुनें।

→

Print → Microsoft Print to PDF (Windows) या ऑनलाइन कन्वर्टर का उपयोग करें

→

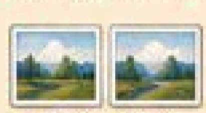

कन्वर्ट करने से पहले इमेजों को सही क्रम में रखें।

→

परिणामी PDF सेव करें।

टेक्नो मंच

आवाज़ (Speech) को Text में कैसे बदलें?

1 विधि 1: Google Voice Typing का उपयोग

1. Google Docs खोलें।
2. नया दस्तावेज़ बनाएं।
3. Tools मेनू पर क्लिक करें।
4. Voice Typing चुनें।
5. माइक्रोफोन आइकन पर क्लिक करें।
6. स्पष्ट रुप से बोलें।
7. आपकी आवाज़ टेक्स्ट में बदल जाएगी।

परिणाम: बोले गए शब्द स्वतः टेक्स्ट में बदल जाएंगे।

2 विधि 2: Gboard Voice Typing (Android)

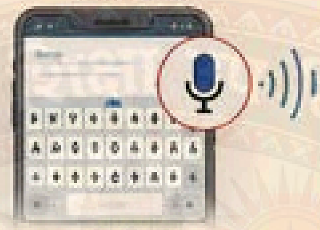

1. किसी भी ऐप में कीबोर्ड खोलें।
2. माइक्रोफोन आइकन पर टैप करें।
3. अपनी भाषा चुनें।
4. बोलना शुरु करें।
5. शब्द स्क्रीन पर लिखते जाएंगे।
6. आवश्यकता अनुसार संपादन करें।

परिणाम: आपकी आवाज़ तुरंत टेक्स्ट में परिवर्तित हो जाएगी।

3 विधि 3: WhatsApp Voice Typing

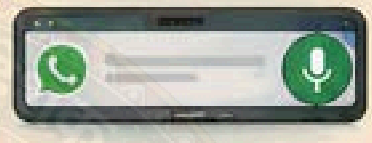

1. WhatsApp चैट खोलें।
2. संदेश लिखने वाले बॉक्स पर टैप करें।
3. कीबोर्ड के माइक्रोफोन आइकन पर क्लिक करें।
4. अपना संदेश बोलें।
5. टेक्स्ट बनने के बाद भेजें।

परिणाम: बिना टाइप किए संदेश तैयार हो जाएगा।

4 विधि 4: Microsoft Word Dictation

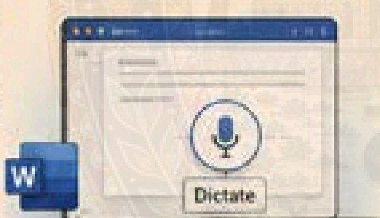

1. Microsoft Word खोलें।
2. Home टैब में Dictate विकल्प चुनें।
3. माइक्रोफोन की अनुमति दें।
4. बोलना शुरु करें।
5. Word स्वतः टेक्स्ट लिखेगा।

परिणाम: आपकी आवाज़ दस्तावेज़ में टेक्स्ट के रुप में दर्ज होगी।

5 विधि 5: Google Keep Voice Notes

1. Google Keep खोलें।
2. माइक्रोफोन आइकन पर टैप करें।
3. अपनी बात रिकॉर्ड करें।
4. ऐप ऑडियो के साथ टेक्स्ट भी तैयार करेगा।
5. नोट सेव करें।

परिणाम: ऑडियो और टेक्स्ट दोनों सुरक्षित हो जाएंगे।

6 विधि 6: ऑनलाइन Speech to Text टूल

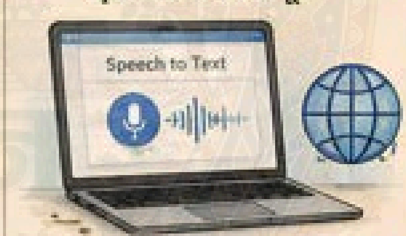

1. Speech-to-Text वेबसाइट खोलें।
2. माइक्रोफोन अनुमति दें।
3. भाषा चुनें।
4. बोलना शुरु करें।
5. टेक्स्ट स्क्रीन पर दिखाई देगा।
6. कॉपी या डाउनलोड करें।

परिणाम: आपकी आवाज़ टेक्स्ट फ़ाइल में बदल जाएगी।

बाल चित्र कला

"जब मैं चित्र बनाती हूँ,
तो मेरी कल्पनाएँ
रंगों में बदल जाती हैं।"

सुधा कुमारी
नव प्रा0 वि0 हरिजन टोला कलगीगंज

पर्यावरण का संदेश
"पेड़ लगाओ, प्रकृति को बचाओ - हमारी पृथ्वी, हमारी जिम्मेदारी।"
आनंद राज
म0 वि0 सैनो, जगदीशपुर, भागलपुर

प्रकृति और उद्योग
"विकास के साथ प्रकृति का संतुलन ही भविष्य की पहचान।"
रिया कुमारी
म0 वि0 सैनो, जगदीशपुर, भागलपुर

रात की शांति
"नीला आकाश,
चमकते तारे और
सुकून से बहती नदी
प्रकृति का सुंदर
रूप।"
लक्ष्मी कुमारी
UHS महेशामुंडा

माँ का प्यार
"माँ के स्नेह के बराबर दुनिया में कुछ नहीं।"
रामचंद्र साह
मध्य विद्यालय जमगांव, जगदीशपुर

मंजूषा कला
"हमारी परंपरा,
कला, हमारी
पहचान और गर्व।"
लक्ष्मी कुमारी
UHS महेशामुंडा

navyatnamagazine@gmail.com

यह अंत नहीं,
एक नए यत्न की शुरुआत है...

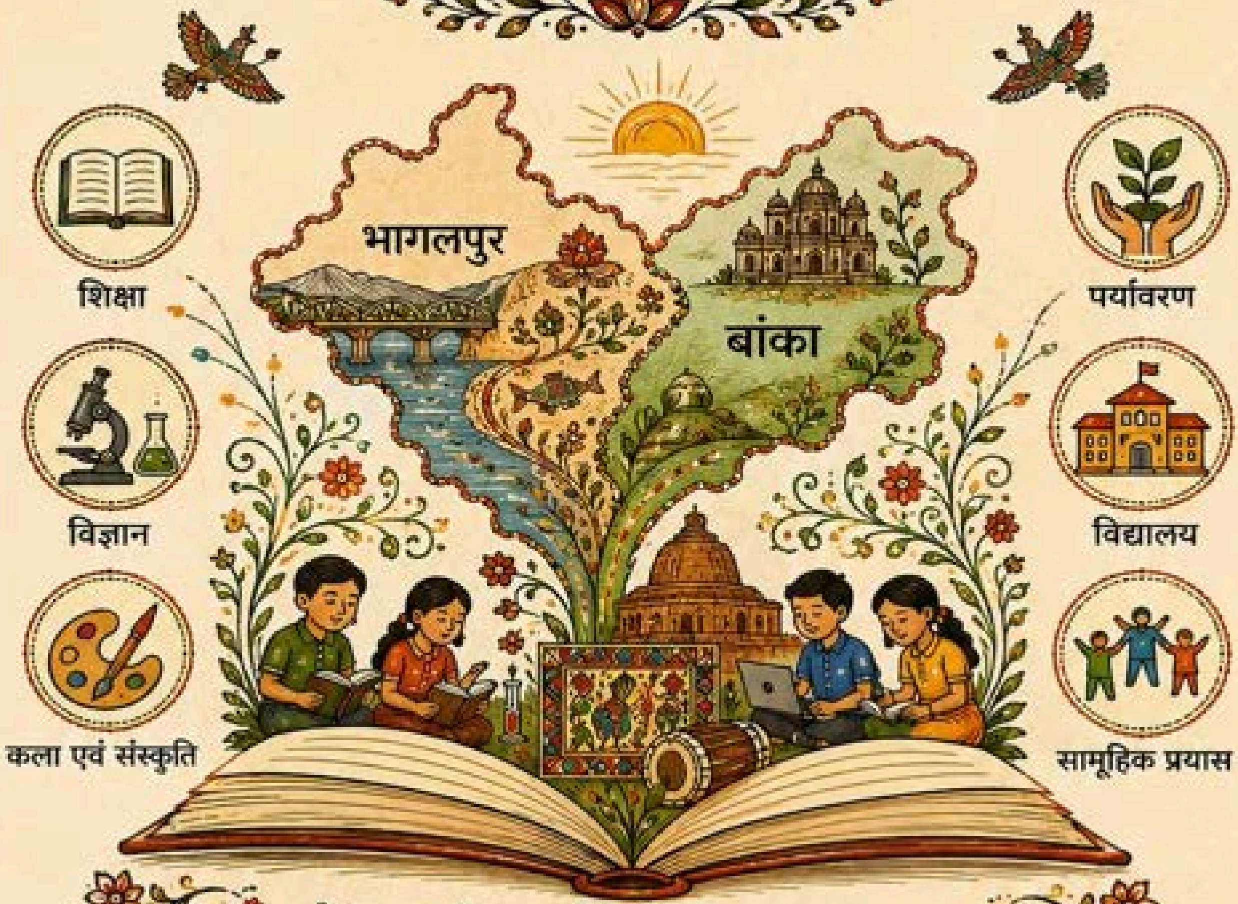

"बेहतर बिहार के लिए साझा प्रयास"

नित नूतन यह पत्रिका, करती है नवयत्न।
गढ़ती है नव चेतना, साहित्यिक नवरत्न।।

TOUCH OR SCAN ME

TOUCH OR SCAN ME

TOUCH OR SCAN ME

TOUCH OR SCAN ME

Google Form Link

पत्रिका के अगले अंक में अपने प्रयासों को जगह देने के लिए गूगल फॉर्म अवश्य भरें।